।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 136 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका सितम्बर– 2019 30/–प्रति

मैं वैदिक दर्शन के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सनातन सिद्धांत में विश्वास करता हूँ। मेरे गुरुदेव का स्पष्ट आदेश है कि माँगने आया कोई भी व्यक्ति, खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए।

–समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?
प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

डूंगर विद्यापीठ सीनियर सैकण्डरी स्कूल, बाड़मेर में ध्यान मग्न छात्र-छात्राएँ। (24 अगस्त 2019)

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

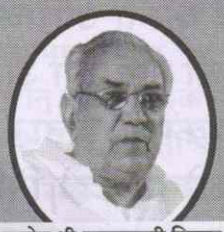

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 136 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका सितम्बर – 2019

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सच्चा प्रेम (अमृतवाणी) 4
संक्रमण काल (सम्पादकीय) 5
युग परिवर्तन का अर्थ संसार के प्राणी मात्र के परिवर्तन से है 6
सिद्धयोग दर्शन का प्रचार–प्रसार भारत में 7
सौ वर्ष पहले सनातन धर्म की वस्तुस्थिति 8
Beginning of my Spiritual Life 9
शंका समाधान 10
गुरुदेव सियाग सिद्धयोग 11–15
त्याग का त्याग (कहानी) 16–18
चित्र पृष्ठ 19–23
मनुष्य और विकास 24
योगियों की आत्मकथा 25
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 26
અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ 27
योग के आधार 28
योग के बारे में 29
भगवान् की अवतरण–प्रणाली 30
अक्षय आनन्द का ज्ञान विश्वभर में बाँटने का फैसला 31
ज्ञान का लक्ष्य 32
सद्गुरुदेव का प्रवचन 33
सिद्धयोग 34
भारत की स्थिति 35
शेष पृष्ठ सम्पादकीय 36–37
ध्यान विधि 38

www.the-comforter.org

सच्चा प्रेम

''इस संसार में हम विविध प्रकार की उपासना देखते हैं। रोगी मनुष्य, ईश्वर के प्रति बड़ा पूजा भाव रखता है।.....अपनी संपदा खो देने वाला व्यक्ति धन पाने के निमित बड़ी पूजा करता है। लेकिन सर्वोच्च उपासना उस व्यक्ति की है, जो ईश्वर को ईश्वर के निमित प्रेम करता है। (यह प्रश्न किया जा सकता है कि) यदि ईश्वर है, तो संसार में इतना दुःख क्यों है ?

उपासक उत्तर देता है- ''दुःख इस जगत् में अवश्य है, (किन्तु) इस कारण मैं ईश्वर को प्रेम करना नहीं छोड़ सकता। मैं उसकी उपासना इसलिए नहीं करता कि वह मेरे दुःख को हर ले। मैं उसको इसलिए प्रेम करता हूँ कि वह साक्षात् प्रेम है।'' अन्य (प्रकार की उपासना) निम्नस्तरी है। किन्तु श्री कृष्ण किसी की भी निंदा नहीं करते। निश्चल खड़े रहने की अपेक्षा कुछ करना अधिक अच्छा है। जो मनुष्य ईश्वर की उपासना आरंभ कर देता है, उसका विकास क्रमशः होता रहेगा और वह ईश्वर को केवल प्रेम के ही निमित प्रेम करने लगेगा।

इस जीवन को जीते हुए पवित्रता कैसे प्राप्त की जाय ? क्या हमें वन की गुफाओं में जाना चाहिए ? उससे क्या लाभ होगा ? यदि मन नियन्त्रण के बाहर हो, तो गुफा में रहने से भी कोई लाभ नहीं, क्योंकि वही मन वहाँ भी उत्पात मचाएगा। गुफा में हमें बीसों शैतान मिलेंगे, क्योंकि सारे शैतान मन में विद्यमान हैं। यदि मन पर नियन्त्रण हो, तो हम जहाँ भी हों, वहीं गुफा प्राप्त कर सकते है।''

-विवेकानन्द साहित्य
(वोल्यूम-7, पेज-278)

मन की नीरव शांति के लिए व्यक्ति साधु -संन्यासी का रूप धारण कर कंदराओं या गुफाओं में जाकर घोर तपस्या करता है, जीवन को भारी कष्ट देता है- परब्रह्म को प्राप्त करने के लिए। लेकिन मन की चंचलता हजारों हाथियों की मदमस्तता से भी अधिक है। चाहे कहीं भी जाओ यदि मन की चंचलता नहीं मिटी तो गुफाओं में बिताया समय व्यर्थ जाएगा। इस मन रूपी चंचल हाथी को केवल सद्गुरु द्वारा दिए गए शब्द रूपी चाबुक से ही वश में किया जा सकता है।

इसी कारण तो गुरुदेव के हजारों शिष्य भारी कोलाहल में भी नीरव शांति और समाधि में सहज ही डुबकी लगा रहे हैं। मानव यदि अपनी बुद्धिगत उपासना को तिलांजलि देकर केवल गुरुदेव के शरणागत हो जाए तो जीवन की सारी समस्याओं का अंत पल भर में हो जाए तथा मनुष्य स्वयं परमात्मा है, इसका भान हो जाए।

योग साधना में बहाना नहीं चलता-किसी ने कहा, ''मेरा लड़का हरीश बड़ा हो जाने पर उसका विवाह रचाकर गृहस्थी का भार उस पर सौंप, मैं योग साधना करूँगा।'' इस पर श्रीरामकृष्ण बोले, तुम्हारे द्वारा कभी साधना नहीं हो सकेगी। बाद में तुम कहोगे, 'हरीश और गिरीश' मुझे बहुत ज्यादा चाहते हैं, वे मुझे छोड़ ही नहीं सकते। हरीश के बच्चा हो जाए तो उसे देखकर जाऊँगा।' फिर तुम्हारे मन में इच्छा उठेगी कि 'हरीश के बेटे का विवाह भी देख लूँ।' इस तरह तुम्हारी कामनाओं और वासनाओं का कभी अंत नहीं होगा।''

-स्वामी रामकृष्ण परमहंस, 'अमृतवाणी' पुस्तक से

संक्रमण काल

आज हम संक्रमण काल से गुजर रहे हैं। संक्रमण काल का अर्थ है **'संधि'** अर्थात् जब हम एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाते हैं तो उसके बीच की स्थिति **'संक्रमण स्थिति'** तथा उसके बीच का समय 'संक्रमण काल' कहलाता है। उदाहरण के लिए-जैसे जल और थल के बीच की स्थिति को हम **'कीचड़'** कहते हैं। यदि हम जल में प्रवेश करना चाहते हैं तो हमें उस कीचड़ में से होकर गुजरना होगा, उसे पार करना होगा। यदि हम उस कीचड़ से डरकर, यूँ सोचकर कि इस कीचड़ में घुसकर पानी में जाने से तो बाहर ही ठीक है तो हम उस तपती धरती पर गर्मी को सहन करते रहेंगे और न तो हम उस जल की शीतलता को जान पायेंगे न ही अपनी गर्मी को शांत कर पायेंगे। इसलिए हमें अपने पैरों (कीचड़) में न देखकर आगे पानी को देखना चाहिए, जिसमें हमें प्रवेश करना है, जो हमारा लक्ष्य है। जब हम उस शीतल जल (जो शांति प्रदान करने वाला है) के अन्दर चले जायेंगे तो फिर हमारा मन ही नहीं करेगा कि हम इससे बाहर निकलें। हमारे संतों ने कहा हैं-

जिन खोजा तिन पाइया,
गहरे पानी पैठ।
मैं भौरी डूबन डरी,
रही किनारे बैठ।।

अर्थात् जो मनुष्य इस कष्ट प्रद संसार को छोड़कर उस परम सुख परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है तो उसे साधना करनी पड़ती है। इस संक्रमण काल में साधक को कई प्रकार की परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है और कई प्रकार की तामसिक वृत्तियों का सामना भी करना पड़ता है। परन्तु जब साधक इन सब समस्याओं को जीतकर उस परम् लक्ष्य (परमात्मा) को प्राप्त कर लेता है, तब उसको इस कष्टप्रद संसार से मोह भंग हो जाता है। इसलिए साधक को हमेशा अपने लक्ष्य पर अडिग रहना चाहिए।

इस संबंध में **''चेतना की अपूर्व यात्रा''** पुस्तक में लेखक ने विस्तार से समझाया है। साधकों की जानकारी के लिए यह गद्य भाग यहाँ दिया जा रहा है-

हम एक **'नए देश'** की खोज में है, परन्तु यह बता देना ठीक होगा कि उस देश की जिसे हम छोड़ रहे हैं और उसके जिसका अभी आविर्भाव नहीं हुआ, इन दोनों के बीच एक काफी कष्टकर निर्जीव भूमि है। यह एक परीक्षा काल है, जो हमारे संकल्प की दृढ़ता के अनुसार कम या अधिक लंबा होता है। परन्तु हम जानते ही हैं कि हमेशा से ही, एशिया, मिस्र अथवा यूनानी गायक ऑरफियस के दीक्षा काल से लेकर, होली ग्रेल की खोज के काल तक हमारे अधिरोहण का इतिहास परीक्षाओं से भरा पड़ा है।

प्राचीन काल में वे दीक्षाएँ विलक्षण होती थीं और ईश्वर साक्षी है कि गाजे-बाजे के साथ पत्थर की शवपेटी के अंदर प्रवेश करना अथवा चिता के सामने स्वयं सार्वजनिक शवपेटियों और ऐसे जीवनों को जानते हैं जो एक प्रकार का कब्र में उतर जाना ही हैं।

अतः उनसे बाहर निकलने का कुछ प्रयत्न करना उचित है। और फिर, यदि गौर से देखें तो कोई विशेष हानि नजर नहीं आती।

इस संक्रमण काल में सबसे कठिन परीक्षा है **आन्तरिक शून्य** की। मानसिक उत्तेजना में रह चुकने के बाद मनुष्य सहसा अपने आप को बीमारी से उठे आदमी सा पाता है, सिर में एक अजीब गूँज सी होती है। मानो यह संसार बेहद शोरगुल से भरी थकाने वाली जगह हो। संवेदनशीलता अत्यधिक तीव्र हो जाती है जिसके कारण उसे सब तरफ से चोट सी लगती है; लोग नासमझ और झगड़ालू, वस्तुएँ स्थूल और परिस्थितियाँ कठोर प्रतीत होती है-संसार बहुत ही बेतुका मालूम पड़ता है।

यह अंतर्प्रवृति के प्रारंभ का स्पष्ट लक्षण होता है तो भी, यदि मनुष्य ध्यान की क्रिया द्वारा सचेत रूप से अंदर उतरने का प्रयास करें तो वैसा ही शून्य मिलेगा, एक अंधकूप सा अथवा एक निराकार निष्क्रियता सी दिखती है। यदि मनुष्य अवरोहण के लिए उद्योग करता ही जायें तो कुछ क्षण, दस क्षण, दो मिनट, कभी इससे भी अधिक समय के लिए वह सहसा नींद में डूब जाता है- वास्तव में वह साधारण नहीं होती।

हम केवल एक दूसरी चेतना में चले जाते हैं पर इन दोनों को जोड़ने वाली कड़ी अभी नहीं और हम वहाँ जैसे थे देखने में उससे कुछ बेहतर होकर नहीं लौटते। यह बीच की स्थिति मनुष्य को आसानी से एक प्रकार के असंगत शून्यवाद में पहूँचा सकती है- बाहर कुछ शून्य। यहाँ बहुत ही

शेष पृष्ठ 36 व 37 पर...

युग परिवर्तन का अर्थ संसार के प्राणी मात्र के परिवर्तन से है।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

युग परिवर्तन का सम्बन्ध सम्पूर्ण संसार से है। पृथ्वी के किसी भाग विशेष के चेतन होने से इसका सम्बन्ध नहीं हैं। ईश्वरीय सत्ता के अवतरण के बिना 'युग परिवर्तन' असम्भव है। आदि काल से ऐसा होता चला आया है। मैं देख रहा हूँ कि मेरे जीवन के प्रारम्भिक काल से ही तामसिक शक्तियाँ मुझ पर निरन्तर प्रहार करती चली आ रही हैं। प्रारम्भ में तो भयभीत करके रास्ते से हटाने का प्रयास किया। इसमें जब उन्हें सफलता नहीं मिली तो प्रलोभन आदि के रंगीले चित्र दिखा कर आकर्षित करने का प्रयास करती रही।

जवानी के काल में यह हथकण्डा अपनाया और बचपन में भयभीत करने का। जब ये दोनों हथियार काम नहीं आये तो आज कल 'हितैषी का स्वांग' रचकर गुमराह करने का प्रयास करने में लगी है।

मैं देख रहा हूँ कि उनका यह हथियार भी असफल हो रहा है। उनका अगला कदम मेरे विरोध में प्रचार करने का होगा। मुझे इसका पूर्ण ज्ञान है, यह आखिरी हथियार मेरे लिए सहायक सिद्ध होगा। क्योंकि इनके विरोध से मेरे प्रचार की गति बहुत तेज हो जायेगी। इससे ये तामसिक शक्तियाँ अपना संतुलन खो देंगी। इनके संतुलन खोने का अर्थ है, इनका अन्त। यह आगे होने वाली घटनाओं का चित्र हैं, जो कुछ होना हैं, सब अनिवार्य हैं। इसमें रत्ति भर का भी अन्तर नहीं आ रहा है। क्योंकि मेरा कार्यक्षेत्र सार्वभौम है। जितना अन्धकार भारत में हैं, उतना कहीं नहीं हैं।

अगर मेरा कार्यक्षेत्र भारत तक सीमित होता तो कठिनाइयाँ अधिक होती क्योंकि तामसिक शक्तियों की शक्ति सीमित होती है, जबकि सात्विक शक्तियों की शक्ति असीमित। इस संबंध में श्रीमां ने स्पष्ट कहा है :- **''भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केन्द्रित हो गई हैं। और उनके हल होने पर सारे संसार का भार हल्का हो जायेगा।''**

भारत में सात्विकता की आड़ में असंख्य तामसिक शक्तियाँ, मानव को भ्रमित करके लूट रही हैं। मुझे अच्छी प्रकार बता दिया गया है कि इन तामसिक शक्तियों की भी ताकत क्षीण हो चुकी हैं।

मामूली सा विरोध करके ये परास्त हो जायेगी। परन्तु जिन चतुर लोगों ने धर्म को व्यवसाय के रूप में अपना रखा है, वे ही अधिक विरोध करेंगे। क्योंकि मेरा कार्य क्षेत्र सार्वभौम है, इसलिए इन धर्म के व्यवसाइयों की पोल संसार के सामने खुल जायेगी। **ऐसी आराधना से लोग पूर्ण रूप से विमुख हो चुके हैं, जो प्रत्यक्ष परिणाम न दें।** इस युग का मानव अब अगले जन्म तक इन्तजार करने में विश्वास नहीं रखता। वह तो चाहता है कि जो कुछ भी वह करता है, उसके बारे में उसे प्रत्यक्षानुभूति होनी चाहिए कि उसका कुछ न कुछ परिणाम निकल रहा है। इस युग में प्रायः सभी धर्मों की आराधना बहिर्मुखी है तथा केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित है। जिसका परिणाम निकलना असम्भव है।

थोड़ी बहुत आराधनाएँ अन्तर्मुखी है परन्तु उनकी हद माया के क्षेत्र तक यानि कि आज्ञाचक्र के नीचे तक ही है। हमारे धर्म ग्रन्थों में स्पष्ट लिखा है कि मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र तक माया का क्षेत्र है। इससे भौतिक लाभ तो मिल सकता है, परन्तु आध्यात्मिक लाभ मिलना असम्भव है। **'आज्ञाचक्र का भेदन करके ही अध्यात्म जगत् में प्रवेश किया जा सकता है।'**

गीता के 8वें अध्याय के 16वें श्लोक में भगवान् ने स्पष्ट कहा है :-

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः
पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय
पुर्जन्म न विद्यते।। 8:16।।

''हे अर्जुन, ब्रह्मलोक से लेकर सबलोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं, परन्तु हे कुन्ती पुत्र मेरे को प्राप्त हो कर पुनर्जन्म नहीं होता।'' मेरे से सम्बन्धित लोगों को प्रत्यक्ष परिणाम मिल रहे हैं। क्योंकि यह परमसत्ता की शक्ति का ही प्रभाव है, जो कि सार्वभौम सत्ता है। अतः इस पर किसी धर्म विशेष या जाति विशेष का कोई एक मात्र अधिकार नहीं है। मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि यह शक्ति संसार के मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रकट हो रही है।

अतः इसका प्रसार विश्व स्तर पर होगा। हाँ इसका केन्द्र तो निश्चित रूप से भारत ही रहेगा।

19.6.1988

❖❖❖

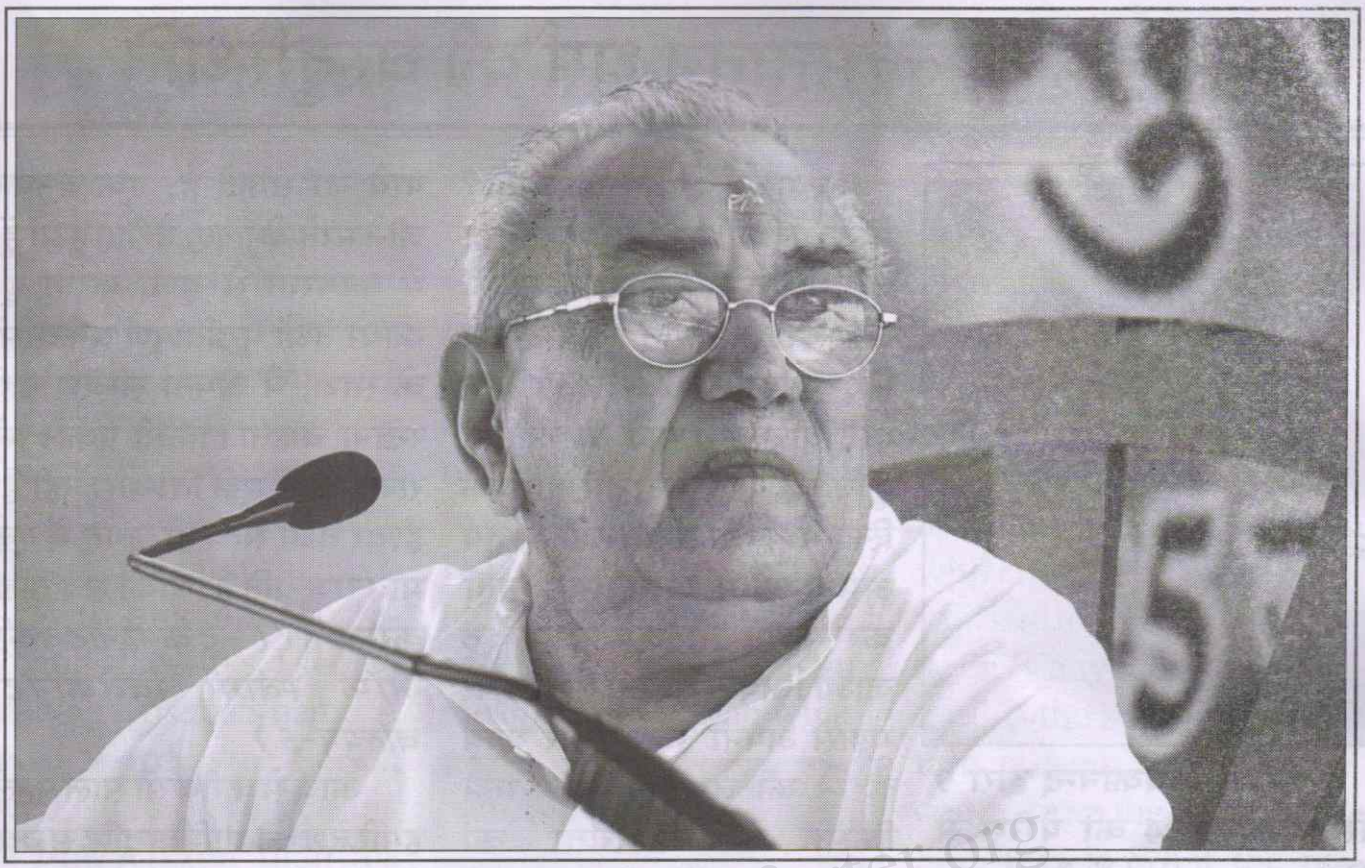

सिद्धयोग दर्शन का प्रचार-प्रसार भारत में

मुझे समझाया जा रहा है कि संसार के लोग बड़ी ही उत्सुकता से इन्तजार कर रहे हैं। मात्र संदेश पहुँचने की देर है। इसका आभास तो लोगों को बहुत पहले से होने लगा था। संसार के कई संत इस संदर्भ में भविष्यवाणी कर चुके हैं।

संसार के साथ-साथ मैं चाहता हूँ कि इसका प्रचार-प्रसार भारत में भी हो। क्योंकि मेरा शरीर इसी पवित्र मिट्टी से बना हैं। मुझे महर्षि अरविन्द की यह भविष्यवाणी बहुत अधिक प्रभावित कर रही है ''क्रम विकास में अगला कदम जो मनुष्य को **एक उच्चतर और विशालतर चेतना** में उठा ले जायेगा और उन समस्याओं का हल करना प्रारम्भ कर देगा, जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना विचारना शुरू किया था।

इसका प्रारम्भ भारत ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्र **सार्वभौम** होगा तथापि केन्द्रीय आन्दोलन **''भारत''** ही करेगा।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-'शर्म, संकोच और हठधर्मीता की आखिर नहीं चल सकी' शीर्षक से

सौ वर्ष पहले सनातन धर्म की वस्तुस्थिति

स्वामी विवेकानन्द द्वारा 9 सितम्बर 1894 को पेरिस से लिखा गया पत्र-'मैं जैसे भारत का हूँ, वैसे ही समग्र जगत् का भी हूँ। इस विषय को लेकर मनमानी बातें बनाना निरर्थक है। मुझसे जहाँ तक हो सकता था, मैंने तुम लोगों की सहायता की है, अब तुम्हें स्वयं ही अपनी सहायता करनी चाहिए। ऐसा कौन सा देश है, जो कि मुझ पर विशेष अधिकार रखता है? क्या मैं किसी जाति के द्वारा खारीदा हुआ दास हूँ? अविश्वासी नास्तिकों, तुम लोग ऐसी व्यर्थ की मूखर्ता पूर्ण बातें मत बनाओ। मैंने कठोर परिश्रम किया है और जो धन मिला है, उसे मैं कलकत्ते और मद्रास भेजता रहा हूँ। यह सब करने के बाद, अब मुझे उन लोगों के मुर्खतापूर्ण निर्देशानुसार चलना होगा?

क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती? मैं उन लोगों का किस बात का ऋणी हूँ? क्या मैं उनकी प्रशंसा की कोई परवाह करता हूँ या उनकी निंदा से डरता हूँ? बच्चे! मैं एक ऐसे विचित्र स्वभाव का व्यक्ति हूँ कि यह पहचानना तुम लोगों के लिए भी अभी संभव नहीं है। **तुम अपना काम करते रहो, नहीं कर सकते तो चुप चाप बैठ जाओ।** अपनी मूर्खता के बल पर मुझसे अपनी इच्छानुसार कार्य कराने की चेष्टा न करो। मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं, जीवन भर मैं ही दूसरों की सहायता करता रहा हूँ।

श्री रामकृष्ण परमहंस के कार्यों के लिए सहायता प्रदान करने के लिए जहाँ के निवासी दो चार रुपये भी एकत्र करने की शक्ति नहीं रखते हैं, वे लोग लगातार व्यर्थ की बातें बना रहे हैं और उस व्यक्ति पर अपना हुक्म चलाना चाहते हैं, जिसके लिए उन्होंने कभी कुछ नहीं किया; प्रत्युत जिसने उन लोगों के लिए जहाँ तक हो सकता था, सब कुछ किया। **''जगत् ऐसा ही अकृतज्ञ है।''** क्या तुम यह कहना चाहते हो कि ऐसे जातिभेद जर्जरित कुसंस्कार युक्त, दयारहित, कपटी, नास्तिकों एवं कायरों में से जो केवल शिक्षित हिन्दुओं में ही पाये जा सकते हैं, एक बनकर जीने मरने के लिए, मैं पैदा हुआ हूँ। मैं कायरता से घृणा करता हूँ। कायर तथा मूर्खतापूर्ण बकवासों के साथ, मैं अपना सम्बध नहीं रखना चाहता। किसी प्रकार की राजनीति में मुझे विश्वास नहीं है। ईश्वर तथा सत्य ही जगत् में एक मात्र राजनीति है, बाकी सब कूड़ा करकट है।' *(- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद- वॉल्युम-5)*

आज से करीब सौ साल पहले हमारे देश की धार्मिक दृष्टि से क्या स्थिति थी, स्वामी जी के उपर्युक्त पत्रों से स्पष्ट होती है। पिछले सौ सालों में हमारे धार्मिक जगत् में युग के गुणधर्म के कारण कुछ गिरावट ही आयी है। जिनके वंशजों ने स्वामी के साथ कैसा व्यवहार किया, परन्तु आज संपूर्ण देशवासी स्वामी जी के गुणगान करते नहीं थकते। इसी प्रकार की अकर्मण्य एवं स्वार्थीवृत्ति ने सनातन धर्म को रसातल में पहुँचा दिया है। इसमें, मैं कलियुग के गुणधर्म को ही दोषी मानता हूँ। मनुष्य तो कठपुतली है, वह परमसत्ता जिस प्रकार नचाना चाहती है नचा रही है।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
संदर्भ-'सत्य के संहारक युग' शीर्षक से

Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

One day a thought occurred that I was addressed as 'Beta' (Son) so whatever good or bad happens, will be the responsibility of the one whose voice was heard. Why will I be responsible for any faults in this?

With this thought, removing all doubts, I started chanting Krishna's name. A small word, when took speed, started progressing ten times faster than the previous one. A year must have passed when a strange incident happened. One day around four in the morning in partial awakened state what I see is —

I am sitting in a room. There is another room of the same kind. There is a connecting door between that room and mine on which a very beautiful pink coloured velvet curtain is hanging touching the floor. The moment I looked at that curtain I saw it moving as if moved by the blowing wind. At the same time, I heard a sound coming from the other room saying "See, don't move the curtain, it will get removed". I said" Even if a strong blow of wind separates it, it will eventually fall back to its original position." A voice from the other end said," Do you understand the meaning of separation? I said," Can there be any meaning other than what I

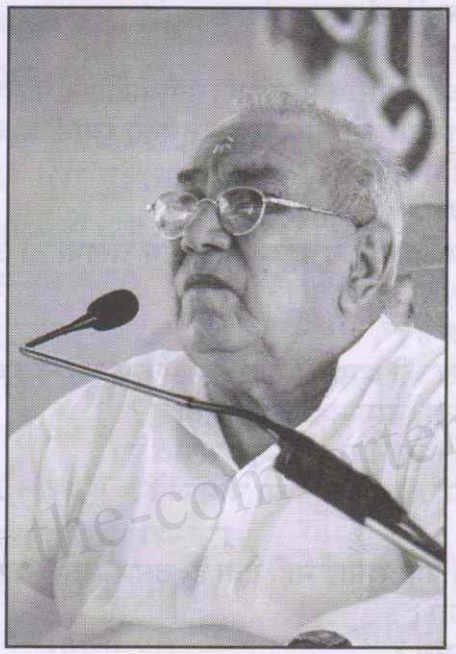

have just said?"The voice from the other end said, "yes" and asked to see what the removal of it means. Along with this, the scene related to curtain disappeared and see instead a man whose curtain has been removed, has become all knowing (Trikaldarshi). This way his sense of attachment has been completely broken. His sense of duality has completely ended. He looks at all the beings of the world with equality, neither is he attached to anyone nor does he envy anybody. Right after this the same pink curtain is seen and a voice comes from the other end," See, this is what the removal of curtain means." I said this is a very nice thing and for this only,

I have been doing all this. Then I hear the voice saying this is all right but then there is a word "Yogbhrast", what is it? Do you know anything about it? I said, during the time of spiritual practice (Aradhana), any wrong doing results in downfall of the spiritual practice. The voice from the other side said it is almost right but is not the right definition of it.

To be cont...

शंका समाधान

इस नाम को जपोगे और मेरा ध्यान करोगे तो जो माँगोगे, वही मिलेगा।

समर्थ सद्गुरुदेव श्रीरामलालजी सियाग

साधक.1- जागृति (कुडलिनी जागरण) कितने समय में हो जाएगी ?
गुरुदेव- इसमें समय नहीं होता, फेथ (विश्वास) होता है। विश्वास काम करता है। और गुरु बना रखे हैं क्या ?
साधक- जी गुरुदेव, काशी में है, स्वामी जी।
गुरुदेव- देखो, नाम मैं जो बताता हूँ, वो जपोगे, तो ही फायदा होगा, जो चाहोगे, वही हो जाएगा।
साधक.2:- गुरुदेव, मैंने ध्यान के दौरान देखा कि आप ही भगवान् श्री कृष्ण हैं ?
इसका क्या मतलब हुआ ?
गुरुदेव:- (मुस्कुराते हुए) वो आप जानो।
साधक.3:- गुरुदेव ये मेरी पत्नी है, Russia (रूस) से है, ये चाहती है कि इनके घर-परिवार वालों पर भी आपकी कृपा हो, वो भी आपका ध्यान करें।
गुरुदेव:- हाँ, जरूर ऐसा करो, मेरी किताब है अंगेजी में, Religious Revolultion in the world (विश्व में धार्मिक क्रांति) वो ले जाओ, मेरी C.D. ले जाओ कंप्युटर में से, घरवालों को दिखाओ और रूस में भी सबको बताओ। और नाम जपो हर वक्त।
साधक.4:- गुरुदेव मेरी किडनी में Problem, हर वक्त पेट में दर्द भी रहता है। डॉक्टर ने कहा है, दोनों किडनियाँ खराब है।
गुरुदेव:- ठीक हो जाऐंगी, नाम जपो।
साधक.5:- गुरुदेव मैं कॉम्पीटिशन की तैयारी कर रहा हूँ। कॉम्पीटीशन में सफल होने के लिए क्या करूँ ?
गुरुदेव:- दीक्षा कार्यक्रम में आना, गुरुवार को वीरवार को तुमको ध्यान का तरीका बताऐंगें, उसको करोगे कॉम्पीटीशन में सफल हो जाओगे।
साधक.6:- गुरुदेव, नाम जप में मुश्किल होती है।
गुरुदेव:- नाम तो जपना ही पड़ेगा। मंजिल तक पहुँचने के लिये चलना तो आपको ही पड़ेगा, मतलब उसका नाम तो जपना ही पड़ेगा।
साधक.7:- गुरुदेव ध्यान नहीं लगता है ?
गुरुदेव:- नाम जप करो हर समय तेल की धार की तरह, साइकिल की चैन की तरह।
साधक.8:- गुरुदेव नाम जप नहीं होता, नाम नहीं जपा जाता है ?
गुरुदेव:- कोशिश करते रहो, कोशिश करने से सब कुछ संभव है।
साधक:- गुरुदेव नाद सुनने लग गया है, नाद सुनें या नाम जपे ?
गुरुदेव:- नाद सुनो।
साधक:- गुरुदेव भीड़ में शोरगुल में नाद सुनाई नहीं देता है, उस समय क्या करें ?
गुरुदेव:- हाँ, उस समय नाम जप करो।
साधक:- और, गुरुदेव, ध्यान के समय ?
गुरुदेव:- ध्यान में नाद सुनो।
साधक.9:- गुरुदेव, तिल्ली लगातार बढ़ रही है, डॉक्टर्स को भी दिखाया है, कोई फायदा नहीं हुआ ?
गुरुदेव- नाम जपो, ठीक हो जाएगी।
साधक.10- गुरुदेव, पेट में, साइड में गाँठ है
गुरुदेव- किसकी है ? कैंसर की।
साधक-जी हाँ, गुरुदेव
गुरुदेव- नाम जप व ध्यान करो, ठीक हो जाएगी।
साधक- गुरुदेव सीने में, हाथ, पैरों में दर्द रहता है।
गुरुदेव- दीक्षा कब ली ?
साधक- गुरुदेव, आज ही।
गुरुदेव- नाम जपो, ठीक हो जाएगा।

❖❖❖

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग

संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org), यू-ट्यूब चैनल (Gurudev Siyag's Siddhayoga - GSSY), फेसबुक (Avsk Jodhpur - Gurudev Siyag Siddha Yoga AVSK) व अन्य सोशल मीडिया से जानकारी प्राप्त कर जोधपुर मुख्यालय में फोन पर हुई बातचीत के कुछ अंश-

आस्ट्रेलिया-सिडनी (2.8.2019):-

यू-ट्यूब पर वीडियो देखकर पहली बार किया ध्यान, हुआ स्वतः योग।

गुस्सा और चिड़चिड़ापन खत्म हो गया संजीवनी मंत्र के प्रभाव से।

हरियाणा के रोहतक जिले की निवासी श्रीमती निर्मल ढुल्ल (जाट) उम्र-61 वर्ष जो हाल निवास सिडनी (आस्ट्रेलिया) में है। 2 अगस्त को आश्रम के मोबाइल नं. पर कॉल आया और उन्होंने जो बताया वो बड़ा ही अद्भुत और पूरी दुनिया के वैज्ञानिकों के लिये भी शौध के विषय से कम नहीं है कि सद्गुरुदेव सियाग की वाणी सुनते सुनते, स्वतः (Automatic) ही योग शुरू हो जाए !

और सद्गुरुदेव सियाग सिद्धयोग से जुड़े हुए लाखों साधकों के लिए भी अति हर्ष का विषय है कि सात समन्दर पार -सद्गुरुदेव का दिव्य तार-जिज्ञासुजनों के हृदयों के आर-पार हो रहा है और दे रहा है असीम नीरव शांति।

उनसे हुई बातचीत में उन्होंने बताया कि "मैं सोशल मीडिया पर धार्मिक कार्यक्रम देखती रहती थी। एक दिन देव संयोग से यू-ट्यूब चैनल पर सर्च कर रही थी तो गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का एक वीडियो मिल गया, मैं देखने लगी, विडियो देखते-देखते कब मेरा ध्यान लगा और स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गई, मुझे कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन जब मैं काफी देर बाद सामान्य अवस्था में आई तो सांस बहुत तेज गति से चल रही थी, मन बड़ा ही प्रफुल्लित था। मुझे लगा कि मैंने बहुत बड़ी किसी अमूल्य वस्तु को पा लिया है, जिसकी मुझे कई वर्षों से जिज्ञासा थी। उसके बाद संस्था की वेबसाइट और बहुत से वीडियो देखे। मंत्र जप और ध्यान की विधि समझकर मैंने ध्यान करना शुरू कर दिया। अब करीब एक महिने से भी कुछ ज्यादा समय हो गया है। मेरा जीवन बदल गया है। गुरुदेव के बताए अनुसार सुबह-शाम 15-15 मिनट ध्यान करती हूँ, और अपनी दैनिक गतिविधि में लग जाती हूँ। दिनभर मंत्र जप चलता रहता है।

मेरे जीवन में सबसे बड़ा बदलाव यह आया कि मुझे गुस्सा बहुत आता था, मन चिड़चिड़ा हो गया था। गुरुदेव सियाग सिद्धयोग की अद्भुत चेतना से मेरा मन निर्मल हो गया। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। और अब मैं नियमित रूप से गुरुदेव की आराधना कर रही हूँ।"

15 अगस्त को उनसे फिर विस्तार से बात हुई तो और भी रोचक जानकारियाँ मिली, जो उन्होंने अति उत्साहित और प्रफुल्लित अंदाज में बताया जो इस प्रकार है -

-पिछले 23-24 वर्षों से आराधना कर रही थी। अलग अलग कई नामदान ले रखे थे। एक संत जो हरियाणा के ही है, उनसे भी नाम दान ले रखा था। उनके आश्रम में विवाद और कुछ अन्य घटनाएँ हो गई तो मेरा मन उनसे हट गया। फिर एक सहेली के कहने से एक और गुरु से नामदान लिया लेकिन जिसे आत्मिक शांति कहते हैं, पूर्ण संतुष्टि कहते हैं, वैसा तो कुछ हुआ नहीं, फिर भी क्या

करूँ? मुझे ईश्वर की भक्ति जो करनी थी, और यह भी ज्ञान था कि बिना गुरु के पार नहीं पड़ती तो आराधना किये जा रही थी।

-पिछले 8-9 महिने हो गए हैं, बेटे के पास आस्ट्रेलिया आये हुए। बेटा कई वर्षों से यहाँ रह रहा है।

-मैं यू-ट्यूब पर सर्च करती रहती थी कि कोई और गुरु मिल जाए।

-देव संयोग से या यों कहूँ कि मेरा भाग्य बदलने वाला था, मुझे समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का एक वीडियो मिल गया। मैं देखने लगी तो देखते-देखते ही मेरे योग शुरू हो गया तो मुझे असीम आनंद की अनुभूति हुई।

-मैंने गुरुदेव का फोटो नेट से निकाल कर तस्वीर बनाई और नियमित ध्यान शुरू कर दिया तो पूरे शरीर में झनझनाहट सा हुआ, ऐसी अनुभूति पूरे जीवन काल में नहीं हुई और मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने हरियाणवी भाषा में कहा कि -''अबे साचो गुरु पायो'' अर्थात् अब सच्चा गुरु पाया या मिल गया है।

-मंत्र का सघन जप और नियमित ध्यान कर रही हूँ।

-ध्यान के दौरान अद्भुत कलर (रंग) दीखाते हैं, इतने सुन्दर और फुलझड़िया के झरनों जैसा प्रकाश प्रवाहित होता देखती हूँ। मैं इतनी गद्गद होती हूँ कि मेरे पास उसको बयां करने के लिए कोई शब्द नहीं है, लेकिन मुझे अपार, असीम आनंद की अनुभूति हो रही है।

-जब उनको कहा कि आप अन्य लोगों को भी गुरुदेव के बारे में बताया करो तो उन्होंने बताया कि ''अब मेरे दिल में इस आनंद को लेने के सिवाय दूसरा कोई काम ही नहीं है। मैं पार्क में घूमने जाती हूँ तो लोगों को बताती हूँ कि ये साचो गुरु है, ध्यान लगाओ और नामदान लेकर जपो।''

-सिडनी में ही एक कैंसर मरीज है, मैंने उनको समझाया है और तीन बार उनसे मिलने गई और उनको समझाया कि संजीवनी मंत्र का जप और ध्यान करो। अब उसने शुरू किया है, देखती हूँ क्या परिवर्तन आता है?

-अब मुझे एकांत अच्छा लगता है, जबकि इस उम्र में घर वाले अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं, और बूढे बुजूर्गों की यही शिकायत रहती है कि मुझसे मिलने नहीं आते, मेरे से कोई बात नहीं करते आदि। जबकि मैं तो सोचती हूँ कि ''अब मेरा गुरु और मैं'', बस इसी धुन में रहूँ। मुझे कोई आराधना में बाधित नहीं करे, मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं और कोई शिकायत करता है, बूढ़ा-बुजूर्ग तो मैं तो यही सलाह देती हूँ कि अब अपना समय सिमरण में लगाओ, घर के कार्यों और बहु-बेटों में मोह रखाते ही क्यों हो?

-अब मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं, गुस्सा शांत और अपार खुशी प्रतिपल।

-भारतीय संस्कृति का पूरा पालन करती हूँ और उसी तरह के परिधान पहनती हूँ। और यहाँ भी मेरे घर में शुद्ध सात्विक खाना बनता है। दोनों बेटे भी शुद्ध सात्विक है। ''मैं थने बताऊँ बेटा, पूरो साचो गुरु पायो है।''

विश्लेषणात्मक तथ्य यह है कि गुरुदेव की दिव्य वाणी और गुरुदेव की तस्वीर में एक अद्भुत तेज और अलौकिक शक्ति है, जो कार्य रही है। इस आध्यात्मिक शक्ति के लिए कोई कार्य मुश्किल नहीं है और इस मिशन के विश्व पटल पर पहुँचने में, एक क्षण भर का भी समय नहीं लगेगा, जिस दिन दिव्य शक्ति एक साथ लाखों करोड़ों लोगों को अपने घर बैठे ही सिद्धयोग के दिव्य ओज से सराबोर कर देगी, जैसा कि श्रीमती निर्मल का मन निर्मल किया है। समय समय पर कुछ ऐसे उदाहरण सामने आये हैं, जो बड़े ही अद्भुत और आश्चर्यशकित करने वाले हैं।

तस्वीर से ध्यान लगने के विषय में गुरुदेव ने लिखा भी था। सन् 2008 को भारत के मुख्य न्यायाधीश को लिखे पत्र में सद्गुरुदेव सियाग ने लिखा था कि-''मेरी संस्था की वेब (www.the-comforter.org) में पूर्ण जानकारी उपलब्ध है। इस वेबसाइट से मेरी तस्वीर लेकर,संपूर्ण विश्व के ''एड्स'' रोगी, उसका ध्यान अपने आज्ञाचक्र पर करें तो क्या होगा? ईश्वर ही जाने।''

भारतीय योग दर्शन में वर्णित इस ''सिद्धयोग'' से विश्व शांति के रास्ते की सभी रुकावटों का समाधान संभव है।''

अमेरिका: कनेक्टिकट-

श्री खेमराज प्रसौद (11.8.2019)

मेरे को तो भगवान् से मिलना है, ऐसी अन्दर से तड़प हो रही है। इसीलिए मैंने आश्रम पर कॉल किया है कि इस संबंध में मेरा मार्गदर्शन करें।

On the 11th of August'19, Khemraj Persaud from Connecticut in the USA called Adhyatm Vigyan Satsang Kendra, Jodhpur. He said that he has

been searching for **GOD**. He was **seeking enlightenment.** During this process of seeking GOD, he came to know about GurudevSiyag's Siddha Yoga through Facebook.

He showed keen interest in knowing more about Sadgurdev Shri Ramlal ji Siyag,

Siddha Yoga, Shaktipat Initiation and the method of meditation. He was explained in brief about GurudevSiyag, the philosophy of Siddha Yoga and the method of meditation. He felt happy after learning about Siddha Yoga. He was keen to have the GSSY related matter sent to him. AVSK, Jodhpur in turn sent all the related GSSY matter to him for which he was thankful.

He said that he will start practicing Siddha Yoga after listening to the Sanjeevani mantra in Gurudev's divine voice and stay in touch with AVSK, Jodhpur for any further queries or doubts. He was also informed about the official website of Gurudev: www.the-comforter.org. which he promised to visit to understand this philosophy more deeply.

आसाम:-(12.8. 2019) नींद की समस्या है:-उड़ीसा निवासी, 35 वर्षीय श्री **कमल प्रसाद सामल**, जो आसाम में आर्मी में नौकरी कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि सन् 2015 में मुम्बई के अश्विनी अस्पताल में प्रत्येक रविवार को आयोजित होने वाले सिद्धयोग शिविर में गया था। वहाँ पर गुरुदेव की वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर 15 मिनट ध्यान किया था। उस दिन मुझे मन में शांति मिली थी। मुझे लम्बे समय से नींद नहीं आती थी।

ध्यान के बाद मुझे एक छोटी पुस्तिका दी गई थी, जिसमें सिद्धयोग दर्शन की जानकारी थी। वो पुस्तिका मैंने मेरे पास रख ली। फिर कुछ दिन ध्यान किया और उसके बाद मैं कभी करता, कभी नहीं करता और भूल गया। अब मुझे कुछ ज्यादा तकलीफ होने लगी तो मैंने वापस सघन मंत्र जप व ध्यान शुरू किया है। मन में शकुन मिल रहा है। जब दिन भर सघन मंत्र जप करता हूँ तो मुझे असीम शांति का एहसास होता है।

उन्होंने बातचीत के दौरान बताया कि अब मुझे एहसास हुआ कि आराधना में, मैंने जो आलस्य बर्ता है इसी वजह से मुझे इतना परिणाम नहीं मिला जबकि सिद्धयोग में अद्भुत शक्ति है। अब मैं पिछले कुछ दिनों से लगातार सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान कर रहा हूँ। इससे मुझे राहत मिली है। मैं गुरुदेव की आराधना कर नहीं पाया, अन्यथा अब तक मैं पूर्ण स्वस्थ हो जाता।

इससे एक बात सिद्ध होती है कि लोग आराधना नियमित रूप से करते नहीं हैं तो वांछित परिणाम भी नहीं मिलते हैं। कई लोगों के फोन आते हैं कि मुझे परिणाम नहीं मिला। यदि परिणाम चाहते हो तो गुरुदेव द्वारा दिये गये संजीवनी मंत्र का सघन जप और नियमित ध्यान करिये, निश्चित रूप से परिणाम मिलेंगे।

जो नियमित आराधना कर रहे हैं, उनको वांछित परिणाम मिल रहे हैं। सभी प्रकार के रोगों व नशों से मुक्त हो रहे हैं, वृत्तियों में बदलाव आ रहा है। इसलिए गंभीरतापूर्वक सघन मंत्र जप व नियमित रूप से 15-15 मिनट सुबह-शाम, खाली पेट ध्यान करते रहें।

हैदराबाद (9.8.2019):- श्रीमती मंजुलता शर्मा, उम्र-55 वर्ष, पिछले 5-6 वर्षों से समर्थ गुरु की शरणागत होना चाहती थी। इसके लिए कई सत्संगों में भी गई। लेकिन आत्मा सन्तुष्ट नहीं हुई। मन में बहुत सारा भय भी रहता था। कई गुरुओं की कठिन आराधना करना, उनके आश्रमों में कई दिनों तक ठहरना भी मुझे अच्छा नहीं लगता था। आज का समय खराब है, सच्चाई कहाँ है, यह तय कर पाना मेरे वश की बात नहीं थी। इसलिए मुझे समर्थ गुरु नहीं मिले। लेकिन मन में एक आशा थी कि ईश्वर चाहेंगे तो गुरु मिल जायेंगे।

आज से एक-डेढ़ महिना पहले मैं यू-ट्यूब पर सर्च कर रही थी तो मुझे गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का वीडियो मिल गया। मैंने वीडियो सुनना शुरू किया तो मेरे मन में अच्छा शकुन मिला तो मैंने पूरी एकाग्रता से पूरा वीडियो देखा। मन में खुशी का एहसास हुआ। फिर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा,

मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव सियाग सिद्धयोग के बहुत से वीडियो देखे और बताई गई ध्यान की विधि के अनुसार ध्यान करना शुरू किया। मेरे जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है। अब मैं नियमित ध्यान कर रही हूँ।

उन्होंने फोन कर पूछा कि मुझे सिद्धयोग दर्शन की दीक्षा लेने के लिए क्या जोधपुर आना पड़ेगा या मैं घर बैठे ही कर सकती हूँ?

जब उनको बताया गया कि आप अपने घर बैठे ही, गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर आराधना कर सकती हो, आप चाहो तो आ सकती हो लेकिन आना अनिवार्य नहीं है।

गुरु तत्त्व सर्वव्यापक है, जहाँ शिष्य याद करता है, वह शक्ति सहयोग करती है। और सबसे बड़ी बात यह है कि यह आराधना बहुत ही सहज, सरल और आम आदमी की पहुँच में है। हर कोई यह आराधना कर सकता है।

उन्होंने बताया कि मुझे खुशी इतनी हुई कि मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। कोई तो है जगत् में जिनसे अपनी समस्या का समाधान हो सके।

उनको इस बात से बहुत खुशी हुई और तुरन्त बोला कि मुझे इतना ज्ञान था कि गुरु बाँधता नहीं है, बंधन मुक्त करता है, और कोई भी मंत्र बिना गुरु के काम नहीं करता है। और मुझे ऐसे समर्थ सद्गुरुदेव मिल गये।

उन्होंने बताया कि अब मुझे सद्गुरुदेव मिल गये ये मेरे जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। लेकिन एक दर्द जीवन भर रहेगा कि मैं गुरुदेव के साक्षात् दर्शन नहीं कर पायी।

इतना सरल और आम आदमी के लिए सुलभ यह आराधना का पथ है।

जय गुरुदेव।

गाजियाबाद (उ.प्र):-

श्री हरेन्द्र यादव (48 वर्ष):-

पिछले 15-20 वर्षों से समर्थ सद्गुरु की खोज में था। कई सत्संगों में गया हूँ। लेकिन आत्मिक संतुष्टि नहीं मिली थी। अब अचानक यू-ट्यूब पर सर्च किया और गुरुदेव के वीडियो देखे। मुझे आत्मा में लगा कि इनकी वाणी में सच्चाई है। मैंने गुरुदेव के बहुत से वीडियो देखे हैं। अब मैंने मंत्र जप और ध्यान शुरू किया है। एक महिने से ज्यादा समय हो गया है लेकिन इतना गहरा ध्यान नहीं लगता है। फिर भी कुछ ऐसी चीजें घट रही है, जिससे मुझे विश्वास हो रहा है कि कोई अद्भुत शक्ति तो जरूर है जो इन्टरनेट के माध्यम से भी परिणाम दे रही है।

जब उनसे विस्तार से बात की तो पता चला कि पहले उन्होंने बहुत से गुरु धारण कर रखे थे। फिर उनको समझाया कि कोरे कागज पर लिखना आसान है, और लिखे हुए कागज पर लिखना मुश्किल होता है।

जो साधक पहले से कुछ आराधनाएँ करते हैं, जिनकी धारणा का केन्द्र बिन्दु कहीं ओर है, लेकिन उनको परिणाम नहीं मिला है, वे आध्यात्मिकता के लिए तड़प रहे हैं, समर्थ सद्गुरु की खोज में है, और उनको यह आराधना करनी होती है तो प्रारब्ध वश कुछ समय लग सकता है। पुराने संस्कारों की निवृत्ति के लिये सघन नाम जप और नियमित ध्यान जरूरी है। मंत्र जप से संस्कार क्षीण होते हैं। इसलिए धैर्य पूर्वक सघन मंत्र जप और ध्यान करते रहो।

फिर उन्होंने कहा कि मुझे जोधपुर आश्रम आकर भी ध्यान करना है और विस्तार से सिद्धयोग दर्शन की जानकारी लेनी है।

फिर कहा कि जब मैं ध्यान करता हूँ तो सिर भारी हो जाता है, और दिन भर मंत्र, बिना जपे ही स्वतः ही जपा जाना शुरू हो जाता है। और एक आश्चर्य इस बात का हो रहा है कि मैं 15 मिनट का समय माँगकर बैठता हूँ और 15 मिनट होते ही मेरी आँख खुल जाती है। ध्यान के दौरान गहरी नींद आती है। जिसे योग की भाषा में तंद्रा या योग निंद्रा भी कहते हैं।

जबकी शुरू में जो बातचीत हुई तो उन्होंने बोला कि मेरा ध्यान नहीं लगता है।

इसलिए बिना धैर्य खोए, सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान ही आराधना का मूल साधन है। बिना मंत्र जप के कुछ भी हासिल नहीं होगा।

चण्डीगढ़:-

श्री विवेक दत्ता:-(12.8.2019):-

श्री दत्ता जी पंजाब वेयर हाऊस में नौकरी करते हैं। तीन महिने बाद सेवानिवृत्त होने वाले हैं। सड़क पर गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का बेनर देखकर 11 अगस्त को अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की ओर से आयोजित सिद्धयोग शिविर जो कि सूद भवन, सेक्टर 44 ए, चण्डीगढ में शाम को 6. से 7 बजे तक आयोजित हुआ था उसमें शामिल हुए। उनको याद आया कि साल भर पहले भी किसी केबल नेटवर्क में गुरुदेव का कार्यक्रम आया था लेकिन पूरा सुन नहीं पाया था फिर भूल गया।

उन्होंने बताया कि अभी मेरे पूरे परिवार के गुरु धारण नहीं किया हुआ

था। मेरे किसी मित्र ने कहा था कि गुरु के बिना जीवन अधुरा है तथा कोई मंत्र का जाप भी फलित नहीं होता है। लेकिन अब मैं बेहद खुश हूँ कि मुझे समर्थ सद्गुरुदेव मिल गये। अभी मैंने दीक्षा ली है, और पूरे परिवार को भी सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराऊँगा।

मैं सिद्धयोग शिविर में गया, मुझे बहुत ही अच्छा लगा। अब मैं मंत्र का सघन जप और नियमित ध्यान करूँगा।

-उन्होंने बताया कि मुझे एक शंका है कि मैं अकेला बैठकर ध्यान करता हूँ तो मुझे कोई नुकशान तो नहीं होगा ना?

-आप गुरुदेव से प्रार्थना करके, 15 मिनट ध्यान का समय माँगकर बैठना, फिर 15 मिनट होते ही आँख खुल जायेगी। जब समर्थ सद्गुरुदेव की आज्ञा से ध्यान करते हैं तो कुण्डलिनी जाग्रत होने पर किसी भी प्रकार का कोई नुकशान नहीं होता है।

कार्यक्रम में गुरुदेव, कुण्डलिनी जागरण के विषय में कहते थे -***"माँ भला अपने बेटे का नुकशान कैसे करेगी?"***

वर्तमान युग के भागदौड़ भरे मानव जीवन के विकास का परिणाम-नीरस, अकेलापन और अंत में घुट घुटकर प्रति सांस को समाप्त कर देने वाला है, जो व्यक्ति को 50 के पार धीरे-धीरे समझ में आने लगता है।

पिछले कई वर्षों से ऐसे कितने ही बुजूर्ग जनों से बात हुई है, जो पेशे से बड़े औहदे के अफसर, डॉक्टर या शिक्षाविद रहे हो, लेकिन अंतिम पड़ाव बड़ा ही दुखभरा बीता है, और बीत रहा है।

पढ लिखकर हर व्यक्ति किसी सरकारी नौकरी या बड़े औहदे के काम करना पसंद करता है। गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है, संतान होने पर उनकी परवरिश में अपना समय लगाता है, उनको बड़े पदों पर आसीन करने के लिए अपनी रात-दिन एक कर देता है।

बच्चे बड़े होकर नौकरी पर चले जाते हैं। तब तक उनकी सेवानिवृत्ति का समय आ जाता है। जब तक किसी नौकरी में हो तब तक तो समय कट जाता है, कामकाज में समय व्यतीत हो जाता है। लेकिन ज्योंहि सेवानिवृत्ति मिली कि उनको अकेलापन सताने लगता है। अब उनकी तरफ ध्यान देने वाला कोई नहीं होता है।

अब उनको समझ में आता है, अंदर से घुटन होती है कि बेटे के लिए मैंने यह किया, वो किया लेकिन ये तो मेरे हालचाल ही नहीं पूछता और वह लगातार अवसाद में जीने लगता है। अब उनको जो असहनीय पीड़ा और शिकायत है, उनको सुनने और देखने वाला कोई नहीं है। यदि ऐसे समय में पति या पत्नी में से कोई एक, साथ छोड़ दे या आपसी तालमेल नहीं हो तो फिर नारकीय जीवन जियो।

यदि व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिकता का समावेश है तो वह नीरस और अकेलापन बिल्कुल भी महसूस नहीं करता है। उनके साथ अपने सद्गुरुदेव भगवान् का प्रतिपल साथ रहता है। उसकी आंतरिक चेतना इतनी विकसित हो जाती है कि वह सदा ही **आनंदमय जीवन** यापन करता है, और यही असली जीवन का आनंद है कि व्यक्ति को समय रहते किसी समर्थ सद्गुरुदेव की शरण मिल जाये तो जीवन धन्य हो जाता है।

श्री दत्ता जी के जीवन की भी यही कहानी शुरू हो रही थी, अब उनको अकेलापन महसूस होने लगा था कि सद्गुरु का छाया मिल गया तो उनको नई रोशनी मिल गई।

अब उन्होंने कहा कि "सेवानिवृत्ति के बाद अपना अमूल्य समय आत्म कल्याण में लगायेंगे।"

सार तत्त्व यही है कि उत्तम मनुष्य जीवन को जीने के लिए सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में सजीवनी मंत्र सुनकर, जप और नियमित ध्यान करें।

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग-एक सफल, सरल, संपूर्ण रोगों-नशों से मुक्त, अध्यात्म विज्ञान के अनुसार, पूर्ण आनंदमय और इस पृथ्वी पर स्वर्गमय और पार्थिव-अमरत्व का जीवन जीने का एक **दिव्य पथ** है।

मनुष्य मात्र इस पथ पर चल सकता है।

पीलीभीत (उ.प्र.):-

श्री दुर्गेश:-(19.8.2019):-

पिछले दस महिने से गुरुदेव का ध्यान कर रहा हूँ। यू-ट्यूब से गुरुदेव का मंत्र वीडियो सुनकर ध्यान शुरू किया था। जीवन में बहुत बदलाव आया है। गैस की समस्या थी, ऑपरेशन भी करवाया था। 5-6 महिने पहले भी जोधपुर आश्रम में फोन करके पूछा कि मेरे पेट का ऑपरेशन करवाया हुआ है क्या मैं ध्यान कर सकता हूँ? आश्रम से कहा गया था कि आप मंत्र जप और ध्यान करो, सब ठीक हो जाएगा। तब से मैं नियमित ध्यान कर रहा हूँ, गैस दूर हो गई। अच्छा ध्यान लगता है। **आध्यात्मिक अनुभूतियाँ होती है। कई दृश्य दिखाते हैं। सब तरह से अच्छा जीवन शुरू हो गया।**

-साधक

कहानी....

त्याग का त्याग

रानी आत्मज्ञानी होने की वजह से राजा को समय आने पर ही समझाने की प्रतीक्षा में थी, क्योंकि समय आये बिना समझाने का कोई प्रभाव नहीं होता। इसलिए समझाना छोड़कर रानी शांत रही। जो सद्गुरु के समझाने से समझ जाता है, वह ठोकर नहीं खाता है।

यह सर्वथा सत्य है कि त्याग से पूर्ण शांति प्राप्त होती है। परन्तु त्याग के विषय में बड़े मतभेद हैं। कोई गृह त्याग करते हैं। परन्तु शांति के नाम पर रोते रहते हैं। कोई अन्नत्यागी है, कोई नारी त्यागी, तो कोई वचन त्यागी, मौनी है। परन्तु सभी शांति के भूखे हैं। शांति नहीं मिली।

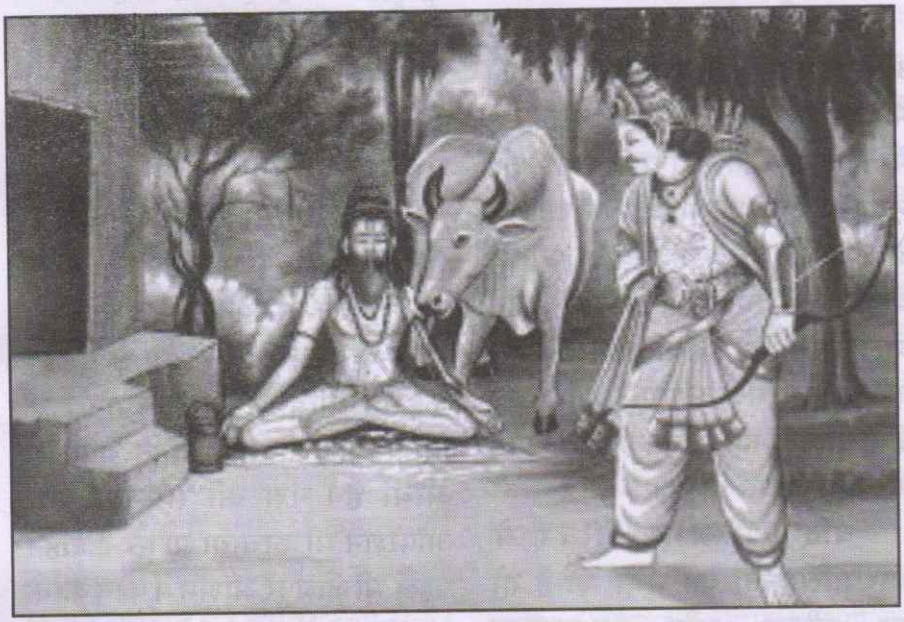

भगवान् जो कहते हैं कि त्याग में शांति है, वह सच है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि त्याग किसका करें। इस प्रश्न के उत्तर में शिखिध्वज राजा के त्याग की कहानी बहुत मननीय है।

शिखिध्वज राजा होने पर भी बड़ा मुमुक्षु व धर्म-जिज्ञासु था। परमतत्त्व को पाने के लिए पूर्ण उत्सुक था। दिनोंदिन उसकी जिज्ञासा बढ़ती रही। वह अनेक संत, महात्मा, ऋषि-मुनियों से मिलता रहता था। श्रद्धा भक्ति से सत्संग करते हुए, साधन भी करता था। जिज्ञासा की तीव्रता के साथ-साथ चित्त की व्याकुलता भी बढ़ी। अनेक प्रकार की साधनाएँ करते-करते, अन्त में उसने यह निश्चय किया कि त्याग के बिना प्राप्ति नहीं; त्याग के बिना समता, शांति नहीं; त्याग ही त्रिकाल अबाधित सत्यप्राप्ति है। क्या त्यागना? कैसे त्यागना? कब त्यागना? इसी विचार में वह मग्न रहने लगा। आखिर में राजसत्ता त्यागने का विचार किया।

रानी को राजसिंहासन पर बैठा, स्वयं वन में जाने का, उसने निश्चय कर लिया। राजभवन में अपनी प्रिय रानी चूड़ाला को बुलाकर उसने अपने हृदय की सब बात उसे कह सुनाई। राजा बोला, "आत्मशांति बिना, मैं जी नहीं सकता। मेरा ज्ञानहीन हृदय इस जगत् को देखकर नित्य ही डरता रहता है। 'मैं एक राजा हूँ', इस अभिमान से जी रहा हूँ। सोते समय सभी की तरह सोता हूँ, खाते समय सभी की तरह खाता हूँ। पृथ्वीमण्डल में ऐसा कौन है जिसको काल ने नहीं खाया? फिर भी जीने की आशा रखता हूँ तो यह कितनी मूढ़ता है। इस नश्वर क्षणभंगुर जीवन को, जो मरण के अनन्तर त्यागना है, पहले ही क्यों न त्यागूँ? हे रानी चूड़ाला! तुम मेरी बड़ी प्यारी पत्नी हो। तुमने मुझ पर बहुत प्रकार के उपकार किए हैं। अब एक उपकार और भी करो। तुम राजगद्दी संभाल लो; जिससे मैं सुखशांति की प्राप्ति करके अपनी तप्त आत्मा को बुझा सकूं।

रानी, राजा शिखिध्वज की अन्तरगति को पूर्ण रूप से जानती थी। वह गुरुपदिष्ट मार्ग की अनुयायी थी। ध्यान योग सम्पन्न थी। उसने ध्यान योग द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान को जानने का ज्ञान प्राप्त किया था। रानी चूड़ाला ने सोचा कि राजा, त्याग के विचार से भ्रान्त है। वह समझाने से नहीं समझेगा। उसके चित्त की गति के अनुरूम समझाने से ही वह समझेगा। ऐसा सोचकर उसने राजा को जाने की अनुमति दे दी।

रानी, राजपाट के व्यवहार को बड़ी निर्भयता से चलाने के योग्य थी। जिनमें आत्मज्ञान का उदय होता है, जिनको चिति कृपा प्राप्त होती है, उनके लिए राज्य का कारोबार बहुत सामान्य विषय है। जगत्, रानी को आत्मा-तुल्य दिखता था। रानी, राज्य-व्यवहार को बड़ी उत्तम तरीके से चलाती रही। राजा हिमालय की एक गिरिकन्दरा में, निर्जन वन में कुटिया बनाकर ध्यान, धारणा, जप, तप

करके दिव्य साधन करने लगा। जैसे-जैसे कठिन नियम को धारता वैसे-वैसे वह अति बेचैन होता, चित चंचल होता, समताहीन बनाता। उसका चित्त रोज अधिकाधिक व्याकुल रहता था। रोज बेचैनी बढ़ती। शांति के बदले क्षोभ, समता के बदले विषमता, आनन्द के बदले विषाद जोरों से बढे जा रहे थे। फिर भी राजा ने सच्चा मुमुक्षु होने से अपना धैर्य नहीं छोड़ा। राजा नित्य त्याग के विषय में सोचता कि अब क्या त्यागना चाहिये?

रानी चूड़ाला एक महान् योगिनी थी। चित्ति शक्ति से सर्वज्ञता पाये हुए थी। इतना ही नहीं, वह अपने योगबल से नीलेश्वरी द्वारा जहाँ-तहाँ इच्छानुसार गमन कर सकती थी। चाहे जैसे शरीर को धारण कर सकती थी। पति को वह कई बार अन्तरात्मा की स्थिति समझा चुकी थी। परन्तु राजा उसको केवल एक पत्नी के रूप में ही देखता था, इस तरह उसकी शिक्षा से उसने कोई ज्ञान ग्रहण नहीं किया। रानी भी समझदार होने से राजा को समय आने पर ही समझाने की प्रतीक्षा में थी, क्योंकि समय आये बिना समझाने का कोई प्रभाव नहीं होता। इसलिए समझाना छोड़कर रानी शांत रही। वह ध्यान द्वारा राजा की नित्य खबर लेती थी-वह क्या करता है, क्या नहीं करता है यह सब अर्न्तदृष्टि से देख लेती थी।

इधर राजा अपने त्याग को बढ़ाने लगा। दो दिन में एक बार, फिर तीन दिन में एक बार, फिर पाँच दिन में एक बार, मात्र फल खाकर उसने अपने शरीर को पूर्ण सुखा दिया। राजा की स्थिति को देखकर रानी बहुत दुःखी हुई। अब उससे रहा नहीं गया। अपने शरीर को योगबल से पलट कर कुम्भ नामक ऋषि के रूप और नाम को धारण करके, वह राजा के सम्मुख प्रकट हो गयी। उस अपरिचित ऋषि को देखते ही राजा आश्चर्यचकित हो गया। उसने ऋषि का सम्मान किया। बैठने को आसन दिया। कुम्भ ऋषि ने राजा का कुशलक्षेम पूछा। राजा ने अपनी अन्तर स्थिति बतलाई और कहा- "हे ऋषि ! मुझे अब तक शांति नहीं मिली। शांति का कुछ उपाय बताइये।

कुम्भ ऋषि ने कहा, "राजन् शांति का एक ही मंत्र है- त्यागात् शान्तिरनन्तरम्।" ऐसा कहकर ऋषि अदृश्य हो गये। राजा शिखिध्वज 'त्यागात् शांति...' मंत्र सुनते ही और भी आश्चर्य में पड़ गया। सोचने लगा, क्या बात है? अभी क्या त्यागना बाकी है? राजगद्दी से लेकर सब त्याग दिया। त्याग का पूर्ण ज्ञान न होने से राजा ने जो त्यागना था, वह नहीं त्यागा, जो नहीं त्यागना चाहिये था, वह त्यागा।

अब राजा सन्देहयुक्त हो विचार करने लगा। उसने सोचा कि अब वह कुटी भी त्याग देगा, मृगचर्म त्याग देगा, कमण्डल भी त्याग देगा। फिर उसने इन सभी चीजों को त्याग दिया। इतने में कुम्भ ऋषि फिर से प्रकट हो गये। बोले, "अरे राजन् ! क्या तुम सुखी हो? शांति पायी?" राजा बोला, "ऋषि ! शांति के लिए बेचैन हूँ। तड़प रहा हूँ।" कुम्भ ऋषि बोले, अभी तक पूर्ण त्याग हुआ ही नहीं। त्यागात् शांति...।" एक ही मंत्र बोलकर ऋषि चले गये। राजा सोचने लगा कि अभी क्या त्यागना बाकी है?

अब शिखिध्वज का त्याग और भी बढ़ गया। उसने पूर्ण निश्चय किया कि उसके पास जो कुछ भी है, यहाँ तक कि प्राण भी, वह त्याग देगा। उसने सोचा-'एक बड़ी चिता रचकर सब चीजों को जला दूँगा। फिर स्वयं भी चिता में कूद पड़ूँगा। जब यह शरीर जल जायेगा तब शांति प्राप्त होगी।' उसने जंगल की सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करके, एक बड़ी चिता रची और उसमें अग्नि लगाई। वह एक-एक वस्तु को याद करके चिता में डालने लगा। कहता- 'हे कुटी। तुझमें बहुत दिन रहा, परन्तु शांति नहीं पायी। अब तुझे अग्नि में स्वाहा कर देता हूँ। उसने कमण्डल, मृगचर्म आदि को अग्नि में डाल दिया।

अन्त में लंगोट निकालकर अग्नि में डाल दीं जो कुछ भी था, सब जला दिया। अब केवल उसका नग्न शरीर रहा। उसने चिता की तीन प्रदक्षिणाएँ की। फिर अपने शरीर से कहा, "हे मेरे प्यारे शरीर ! तुझे अनन्त प्रकार से षड्रस अन्नों से तृप्त करते-करते थक गया, फिर भी तुझसे सुख न हुआ। कई तरह के सुगन्धित जलों से तुझे स्नान कराते-कराते थक गया, फिर भी तुझसे शांति न मिली। न जाने कितनी रमणियों से रमण कराया, फिर भी सुख न पाया। शांति न मिली।" अब राजा चिता में कूदने को तैयार हो गया।

इतने में कुम्भ ऋषि वहाँ प्रकट हो गये। उन्होंने राजा का हाथ पकड़ लिया और कहा, "अरे राजा ! ठहर, ठहर ! तूँ यह क्या अनर्थ कर रहा है?"

राजा बोला, "हे ऋषि ! सब कुछ त्यागने के बाद शरीर त्यागने योग्य समझकर शरीर को अग्नि में त्याग रहा हूँ, जिससे पूर्ण शांति मिल जायेगी।"

कुम्भ ऋषि बोले, "अरे राजा ! यदि शरीर के चिता में जलने से शांति मिलती तो असंख्य जीव जो मर गये हैं, क्या उन्हें शांति मिली? जिसे शरीर में जीवन्मुक्ति की सुखशांति को भोगना है उस शरीर को तूँ जलाने चला है। शरीर भस्म होने के बाद शांति कहाँ और कौन

भोगेगा ? राजा ! तुझे समझ नहीं कि क्या त्यागना चाहिए। देख राजा ! तेरा प्रत्यक्ष दिखने वाला जो शरीर है, उसमें बहत्तर हजार नाड़ी समुदाय और पंचकोश है। वह अनन्त प्रकार की चमत्कार युक्त अन्तर रचनाओं वाला है। ऐसा शरीर माता और पिता के संयोग-सम्बन्ध द्वारा रज और वीर्य से रचा गया है। इसमें पिता का वीर्यरूप आधा अंश है और माता का रजरूप आधा अंश है। ऐसे दोनों अंश एक होकर बने हुए शरीर में त्यागने के लिए तेरी क्या और कौनसी चीज है ?''

''हे राजा ! इस शरीर का मूल कारण जो रज-वीर्य है, वह माता-पिता के खाये हुए शुद्ध अन्न का रस है। वह अन्न रस पृथ्वी का है। अब हे राजा ! इसमें तेरी क्या त्यागने योग्य वस्तु है ? यह मानव, पृथ्वी का उपजा हुआ अन्न खाकर पृथ्वी में ही विलास करता हुआ, पृथ्वी में ही समा जाता है। इसलिए यह शरीर पृथ्वीमय है; इस शरीर में आत्मारूप से परमशांत परमेश्वर प्रवेश करके रहता है, वह भी तूं नहीं है।

इस शरीर के सब इन्द्रियग्रामों में, आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा में अपने-अपने देवता आकर भिन्न-भिन्न कार्य करते हैं, वह भी तूं नहीं है। राजा, तूँ इसे त्यागने चला है ? इसमें तेरा त्याग कौन सा है ? तदन्तर, जैसे पृथ्वी में उपजकर, पृथ्वी में रहकर, पृथ्वी में समा जाने से यह शरीर पृथ्वीमय है, वैसे ही यह पृथ्वी जलमय है, क्योंकि पृथ्वी जल से उपजी है। जल अग्निमय है, क्योंकि जल अग्नि से उपजा है। अग्नि वायुमय है। वायु आकाशमय है। आकाश अवकाश दाता परमात्मामय है।

इसमें तेरा कुछ नहीं है। उसमें 'मेरापन' भ्रान्ति मात्र है, ऐसा जानकर तुझे उस भ्रान्ति को त्यागना चाहिये। यह जो 'हम' (अहंकार) है, यही महान् अनर्थ का मूल है। इसने ईश को जीव माना है। सुख को दुःखकर दिखलाया है। एक को अनेक कर बतलाया है। अहम् नष्ट होकर, अहम् के बदले 'सोऽहम' आ जाये तो फिर त्यागना ही क्या है ?

कुम्भ ऋषि के वचन सुनकर राजा शिखिध्वज की बाहर प्रवाहित होने वाली वृत्ति एकदम अन्तर्मुखी हो गयी। गहरे अन्तर में उतरी हुई वृत्ति आत्माकार होकर आत्मा ही बन गयी। शिखिध्वज को समभाव की समाधि चढ गयी। राजा शांत हो गया। बहुत काल से बेचैन हुआ मन, शांति को खोजता हुआ चित्त, अन्तरशांति प्राप्त होते ही आत्मा में मिलकर आत्मा ही बनकर रह जाता है, चित्तपने को त्याग देता है। जब राजा अन्तर से बाह्य जगत् में आया तब बाह्य जगत में भी वही देखने लग गया।

राजा को इस सिद्धान्त का पूर्ण साक्षात्कार हो गया- 'यथा अत्र तथा अन्यत्र' अर्थात् उसे अद्वैत का अनुभव हो गया। अब वह राजमहल की ओर चल दिया। जो शिखिध्वज अनजाने में अपनी राजगद्दी, प्रजाजन, पत्नी और स्वजनों को विघ्न समझकर त्याग कर गया था, वही राजा, गुरुप्रसादोत्तर और चितिमय जगत् के ज्ञानोत्तर, इस जगत् को, अपने परिजनों को चिति का विलास समझकर जिसमें अति व्याकुल होकर दुःख की अनुभूति करता था, उसी में अब परमानन्द की अनुभूति होने लगी। यही तो है सद्गुरु का महाप्रसाद और कृपा। और वही मार्ग अब समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग बता रहे हैं।

सद्गुरुदेव सियाग जी ने गृहस्थ जीवन में रहते हुए, सिद्धयोग की आराधना का पथ बताया है। लेकिन आज धरातल पर कुछ साधक अलग पथ पर चल पड़े हैं। बहुत से साधक अपने आंतरिक भ्रमित विचारों की चपेट में आकर, पथभ्रष्ट हो रहे हैं। राजाशिखिध्वज की तरह उल्टे रास्ते चल रहे हैं। बहुत से साधकों की दिग्भ्रमित स्थिति है।

सबसे एक ही अनुरोध है कि सद्गुरुदेव ने जो कहा है, उस पर अमल कर लो, सब समस्याओं का अंत हो जाएगा। जिस प्रकार राजा को त्याग का अर्थ समझ में नहीं आया, उसी प्रकार बहुत से शिक्षित, बड़े पदों पर बैठे शिष्यों को 'अपने अपने स्तर' की बात भी समझ में नहीं आयी और गुरुदेव द्वारा स्थापित संस्था के विरुद्ध खड़े हो गए, जो स्वयं को ही नुकशान पहुँचा रहे हैं। प्रत्येक साधक को बहुत गंभीरता से, सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी को, प्रार्थना करते हुए, एकाग्रचित्त होकर सुनना होगा और सद्गुरुदेव से निष्कपट भाव से करूण प्रार्थना करनी होगी कि ''हे प्रभु ! आपका दिव्य उद्गार मेरे मन मस्तिष्क में उतर जाये।'' जो आप चाहते हो वहीं होना चाहिए न कि मेरा चाहा हुआ। आध्यात्मिक आराधना में साधक का अंहकार ही सबसे बाधक पहाड़ है।

सद्गुरुदेव की आज्ञा के विपरीत कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। भौतिक रूप से चाहे आपकी बहुत बड़ी पहुँच है। पूरी दुनिया आपकी मुट्ठी में है लेकिन यदि सद्गुरु द्वारा रोपित मिशन के विपरीत धारा में चल रहे हैं तो उन्हें ब्रह्मा, विष्णु व महेश भी बचा नहीं सकते।

सद्गुरुदेव सियाग जी ने स्वयं अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी महाराज के प्रति अनन्य श्रद्धा भक्ति प्रकट करते हुए कहा है कि -''मेरे लिए तो गुरु ही सर्वोपरि है।''

❖❖❖

अश्विनी अस्पताल, मुम्बई में प्रत्येक रविवार को आयोजित सिद्धयोग शिविर में ध्यान मग्न मरीज। (अगस्त 2019)

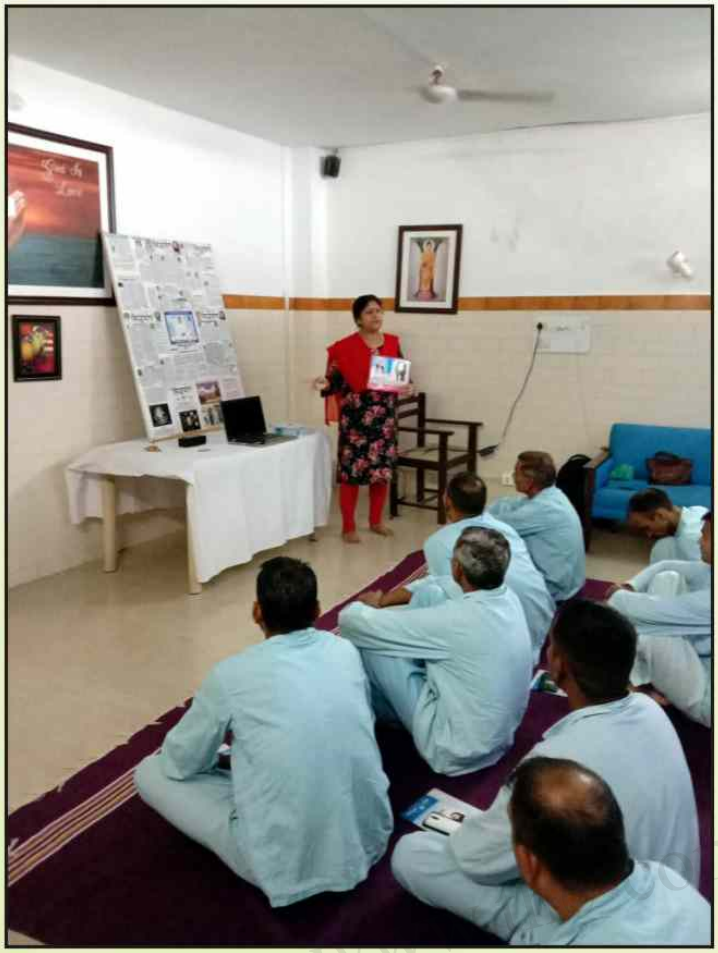

प्राचीन शिव मन्दिर, 21सी, चण्डीगढ़ में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (10 अगस्त 2019)

सूद भवन, सेक्टर 44ए, चण्डीगढ़ में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (11 अगस्त 2019)

जालोर के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित।
विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (अगस्त 2019)

लक्ष्मी आदर्श सैकण्डरी स्कूल, अजीत (बाड़मेर) में सिद्धयोग शिविर आयोजित। सैंकड़ों बच्चों को सिद्धयोग की जानकारी देकर ध्यान कराया गया (23.8.2019)

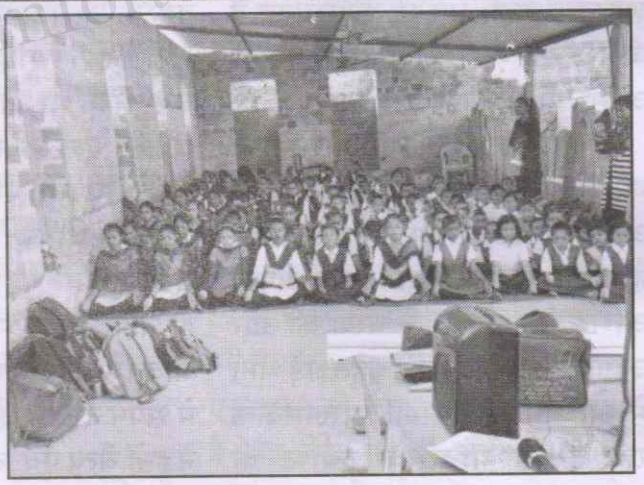

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की असीम कृपा से

नवनिर्मित आश्रम का उद्घाटन व सिद्धयोग शिविर

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-गंगापुरसिटी में

दिनांक-12 सितम्बर, 2019 वार-गुरुवार, समय- सुबह-11.00 बजे आयोजित होगा

स्थानः-दूध डेयरी के पास, ताजपुर रोड़, राधा विहार कॉलोनी, चकछावा, पोस्ट-महुकला, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.) संपर्कः-8209104535

समस्त जिज्ञासुगण सादर आमंत्रित हैं।

गतांक से आगे...

मनुष्य और विकास

परंतु मनुष्य में व्यक्तित्व का चैत्य भाग निम्नतर सृष्टि की अपेक्षा बहुत अधिक तेजी के साथ विकसित होने योग्य होता है, और एक समय आ सकता है कि आंतरात्मिक सत्ता उस बिन्दु के नजदीक पहुँच जाये, जहाँ वह पर्दे के पीछे से निकलकर खुले में आ जाये और प्रकृति में उसके यंत्र-विन्यास की स्वामी बन जाये।

और फिर स्वयं विकसनशील सत्ता में चेतना की वे महत्तर शक्तियाँ उपस्थित रहती हैं, जो मानसिक सत्य को समर्थन देती, उन पर परदा डालने वाली क्रिया के नीचे अवस्थित रहती हैं। यह अतिमानस और वे सत्य-शक्तियाँ प्रकृति को अपनी प्रच्छन्न उपस्थिति द्वारा समर्थन देती हैं। यहाँ तक कि मन का सत्य, उनका परिणाम, एक घटी हुई क्रिया, आंशिक आकारों में चित्रण है। अतः यह केवल स्वाभाविक ही नहीं है बल्कि अनिवार्य मालूम होता है कि सत्ता की ये उच्चतर शक्तियाँ यहाँ, मन में अभिव्यक्त हैं जैसे स्वयं मन, प्राण और जड़ में अभिव्यक्त हुआ था।

आध्यात्मिकता की ओर मनुष्य की प्रेरणा उसके अंदर स्थित आत्मा के आविर्भाव के लिये आंतरिक संचालन है, सत्ता की चित्-शक्ति का अपनी अभिव्यक्ति के अगले चरण की ओर आग्रह है। यह सच है कि बहुत बड़े भाग में आध्यात्मिक प्रेरणा पारलौकिक रही है या मानसिक व्यष्टि के आध्यात्मिक नकार और आत्म-विलोपन की ओर ही रही है लेकिन यह उसकी प्रवृत्ति का केवल एक में से बाहर निकलने, शरीर और मजबूत होने का कारण है मूलभूत निश्चेतना के राज्य में से बाहर निकलने शरीर की बाधा को जीतकर, अंधकारमय प्राण को हटाकर, अज्ञानमय मानसिकता से पिण्ड छुड़ाने की आवश्यकता, इन सभी विघ्नों को अस्वीकार करके आध्यात्मिक सत्ता, आध्यात्मिक पद को सबसे पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण मानकर उसे पाने की आवश्यकता। आध्यात्मिक-प्रेरणा का दूसरा, क्रियाशील पहलू भी अनुपस्थित नहीं रहा है-- प्रकृति पर आध्यात्मिक-प्रभुता पाने और शरीर तक के दिव्य बनने की अभीप्सा।

ऐसी सिद्धि, जो वैयक्तिक रूपांतर के भी आगे जाती है, एक नयी धरती, एक नया स्वर्ग, एक दिव्य नगरी, **पृथ्वी पर दिव्य अवतरण**, सिद्ध पुरुषों का शासन, ईश्वर का राज्य-- और यह राज्य हमारे अंतर में ही नहीं, बाहर भी, सामूहिक मानव जीवन में भी- इन सबके हमने भूतकाल में सपने देखे हैं। हमारे आंतरिक पुरुष ने इन्हें चैत्य पूर्व-दर्शन के रूप में देखा था। इस अभीप्सा ने कई रूप चाहे जितने अस्पष्ट लिये हों, फिर भी पार्थिव प्रकृति में उभरने के लिये भीतर स्थित गुह्य आध्यात्मिक पुरुष की प्रेरणा का संकेत उनमें सुस्पष्ट रहता है।

अगर जड़-भौतिक में हमारे जन्म का गुप्त सत्य पृथ्वी पर आध्यात्मिक उन्मीलन है, अगर यह मूलतः चेतना का विकास है जो प्रकृति में चरितार्थ हो रहा है तो मनुष्य जैसा कि वह है, उस विकास का उच्चतम पद नहीं हो सकता। वह आत्मा का अत्यधिक अपूर्ण प्रकटन है। मन अपने-आपमें अत्यधिक सीमित रूप और यंत्र-विन्यास है।

मन चेतना का केवल एक मध्यवर्ती तत्त्व है, मानसिक का अतिक्रमण करने में असमर्थ है तो मनुष्य का अतिक्रमण करना चाहिये और अतिमानस और अतिमानव को अभिव्यक्त होना और सृष्टि का नेतृत्व हाथ में लेना चाहिये। लेकिन अगर मन, जो उसका अतिक्रमण करता है उसकी ओर खुलने में समर्थ है तो इसका कोई कारण नहीं कि स्वयं मनुष्य अतिमानस और अतिमानसता तक क्यों न पहुँचे या कम-से-कम अपने मन, प्राण और शरीर का योगदान प्रकृति में अभिव्यक्त होते अध्यात्म पुरुष के महत्तर पद के विकास में क्यों न दे।

समाप्त

"जो हमेशा दूसरों के गुण-दोषों की चर्चा करते रहते हैं, वे अपना समय फालतू बरबाद करते हैं, क्योंकि परचर्चा करने से न तो आत्मचर्चा हो पाती है आरै न परमात्मचर्चा ही।"

-स्वामी रामकृष्ण परमहंस 'अमृतवाणी' पुस्तक से

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

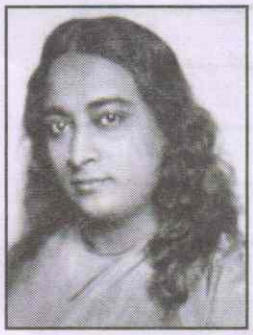

''कालान्तर में विश्व की प्रमुख वैज्ञानिक, सोसायटियों ने मेरे सिद्धान्तों और निष्कर्षों को स्वीकार करके विज्ञान में भारत के योगदान को मान्य किया।

जो कुछ भी छोटा या सीमित हो, वह क्या भारत के मन को कभी तृप्त कर सकता है? एक अखण्ड जीवन्त परंपरा और पुनर्यौवन प्राप्त करने की एक जीवनप्रद शक्ति के द्वारा इस भूमि ने अगणित परिवर्तनों में बार-बार अपना कायाकल्प किया है।

भारत में सदा ही ऐसे लोग उत्पन्न होते आये हैं, जिन्होंने समय के तात्कालिक और मोहक पुरस्कार को ठुकराकर **जीवन के सर्वोच्च अभीष्टों को पाने का प्रयास किया है**-अकर्मण्य परित्याग द्वारा नहीं, वरन् कर्मठ, कठोर संघर्ष द्वारा। संघर्ष को अस्वीकार करने वाले दुर्बल के पास कुछ प्राप्त न कर पाने के कारण त्यागने के लिये भी कुछ नहीं होता। जिसने संघर्ष कर विजय प्राप्त की हो, वही केवल संसार को अपनी विजय के अनुभव का फल प्रदान कर, उसे समृद्ध कर सकता है।

''इस बोस प्रयोगशाला में जड़ पदार्थों की प्रतिक्रिया पर अब तक किये जा चुके कार्य से और वनस्पति-जीवन के अप्रत्याशित तथ्य सामने आ जाने से पदार्थ विज्ञान, प्रकृति विज्ञान, चिकित्सा, कृषि और यहाँ तक कि मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी, अनुसन्धान के अन्यंत विस्तृत क्षेत्र खुल गये हैं। जिन उलझनों के बारे में अब तक यह माना जाता था कि उन्हें सुलझाया नहीं जा सकता, वे भी अब प्रयोगात्मक अन्वेषण के कार्यक्षेत्र में आ गयी हैं।

''**परन्तु कठोर सटीकता के बिना उच्च सफलता नहीं मिल सकती।**

इसीलिये प्रवेश कक्ष में अपने-अपने केस में रखे गये मेरे द्वारा आविष्कृत अतिसंवेदनशील उपकरणों और वैज्ञानिक यंत्रों की लम्बी-लम्बी कतारें लगी हैं। वे दृश्यमान आभास के पीछे छिपे सत्य को खोजने के लिये आवश्यक दीर्घकालिक अनवरत प्रयत्न की व मानव के सीमित सामर्थ्य की परिसीमाओं को लांघने के लिये आवश्यक अविराम कठोर परिश्रम, लगन और उद्योगशीलता की गाथा सुनाते हैं। सभी आविष्कारक वैज्ञानिक जानते हैं कि वास्तविक प्रयोगशाला तो मन है, जहाँ वे माया के पर्दे के पीछे छिपे सत्य के नियमों को खोज निकालते हैं।

''यहाँ जो लेक्चर दिये जायेंगे, वे किसी दूसरे से प्राप्त ज्ञान की पुनरावृति मात्र नहीं होंगे। उनमें इन कक्षों में प्रथम बार सिद्ध किये गये नये आविष्कारों का ज्ञान दिया जायेगा। इस संस्था के कार्य-विवरण के नियमित प्रकाशनों द्वारा भारत के योगदान समस्त विश्व में पहुँच जायेंगे। वे सार्वजनिक सम्पति बन जायेंगे। कभी भी किसी भी बात का 'पेटेंट' नहीं लिया जायेगा। हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का सार ही यह है कि हमें ज्ञान का प्रयोग केवल अपने लाभ के लिये करने की संस्कृतिहीनता से सदैव दूर रहना चाहिये।

''मेरी यह भी इच्छा है कि इस संस्था की सुविधाएँ, जहाँ तक सम्भव हो सके, सभी देशों के अनुसन्धान कर्त्ताओं के लिये उपलब्ध हों। इसमें, मैं अपने देश की परम्पराओं को आगे चलाने का प्रयास कर रहा हूँ। पच्चीस शताब्दियों पूर्व भी भारत नालंदा और तक्षशिला के अपने प्रचलन विश्वविद्यालयों में विश्व के सभी हिस्सों से आये हुए छात्रों को ज्ञानप्राप्ति की सुविधा उपलब्ध कराता था।

''विज्ञान न तो पूर्व का है, न पश्चिम का, बल्कि अपनी सार्व-लौकिकता के कारण वह सब देशों का है, परन्तु फिर भी भारत इसमें महान् योगदान देने के लिये विशेष रूप से योग्य है। भारतीयों की ज्वलंत कल्पनाशक्ति तो ऊपर-ऊपर परस्पर विरोधी लगने वाले तथ्यों की गुत्थी से भी नया सूत्र निकाल सकती है, परन्तु एकाग्रता की आदत ने इसे रोक रखा है। यह संयम मन को अनंत धीरज के साथ सत्य की खोज में लगाये, रखने की शक्ति प्रदान करता है।''

उस महान् वैज्ञानिक के उन अंतिम शब्दों को सुनकर मेरी आँखें छलछला उठीं। यह ''धीरज'' ही क्या सचमुच भारत का पर्यायवाची शब्द नहीं बन गया है, जिसने काल और इतिहासकार, दोनों को ही समान रूप से अचंभित कर रखा है?

संदर्भ-योगी कथामृत, परमहंस योगानंद

क्रमशः अगले अंक में...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

हरि रूठे कुछ डर नहीं, तूँ भी दे छिटकाय।
गुरु को राखो सीस पर, सब विधि करे सहाय"॥
(सहजोबाई)

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर न चहिए, इन सिर लागी काई।
इनके भरोसे कोई मत रहना, इनहू मुक्ति न पाई॥
(संत कबीर)

कबीरा चारा अगम की सद्गुरु दई लखाय।
उलट नाहि पड़िये सदा स्वामी संग लगाय॥ राधाकृष्ण

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥ गुरुगीता॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

"तीन ही लोक जेबून निर्माण जाले,
तया दवरा याचि कोणी न बोले।
जगी घोरला देव तो चोरलाहे,
गुरुचीण तो सर्वथाही न दीसे॥"

"तीनों लोक (भूलोक, द्युलोक, पाताल लोक) जहाँ से उत्पन्न हुए उस परब्रह्म को कोई नहीं कहता। जगमें सर्वोत्तम देवता चुराया गया है। उसके चोरी चले जाने के पश्चात वह दिखाई नहीं दे रहा है। उस सर्वदेवाधिदेव की चोरी की तो गई है, किन्तु सद्गुरुरूपी गुप्तचर की सहायता के बिना वह नहीं ढूंढ सकेगा"॥

અદ્‌ભૂત સિદ્ધયોગ

અથવા રોજ કામે જતા બસ કે ટ્રેનમાં પણ પંદર મિનીટ ધ્યાન કરી લે છે.

ગુરુદેવની આરાધનામાં જપ અને ધ્યાન મૌન હોવાથી સાધક એની આરાધના સહેલાઈથી અને બીજા કોઈને તકલીફ આપ્યા વગર કરી શકે છે.

★★★

૬. સિદ્ધયોગ સાધનાના દૃશ્ય પરિણામો

સિદ્ધયોગ સાધનાના દૃશ્ય પરિણામશું હોય છે?

ગુરુદેવ સિયાગ બધા સાધકોને દીક્ષા તો સામૂહિક રીતે એક સરખી જ આપે છે માત્ર એના પરિણામસ્વરૂપે થતા અનુવો અલગ અલગ સાધકો માટે અલગ અલગ હોય છે. આમાંથી કેટલાક સાધારણ રીતે જોવામાં આવેલ અનુભવો નીચે પ્રમાણે છે.

(૧) શરીર ધ્રુજારી આવે.

(૨) શરીર ડોલવા માંડે

(૩) કપાળ ઉપર આજ્ઞાચક્ર પર ભાર લાગે છે

(૪) શરીરમાં ગરમી અનુભવવામાં આવે છે. કેટલાકને પરસેવો છૂટે છે.

(૫) ઘણા હસે છે, તો ઘમા રડે છે. કોઈ કોઈ તો ચીસો પાડે છે.

(૬) માથું ભારે લાગે છે.

(૭) ડોક ગોળ ગોળ ફેરવે છે.

(૮) શરીર ગોળ ગોળ ઘુમે છે. શરીર જમીન પર આળોટે છે.

(૯) કોઈને એમના કરોડરજ્જુ પર વિજળી જેવા કરંટ ધડધડાટ ઉપર નીચે ચઢતો ઉતરતો હોય તેવું લાગે છે.

(૧૦)કેટલાક સાધકો ધ્યાનમાં યોગિક આસનો આપમેળે થાય છે. અભણ કે યોગ વિશે કોઈ પણ જાણકારી ન હોવા છતાં કેટલાક સાધકોને અદ્‌ભૂત અને અસાધ્ય યોગિક આસનો પણ થાય છે.

(૧૧) કોઈને દેવી -દેવતાના દર્શન થાય છે.

(૧૨) કોઈને જ્યોતિદર્શન, પ્રકાશ અને રંગ, અનાહદ નાદ, દિવ્ય સુગંધ અથવા અવાજો, સંભળાય છે.

(૧૩) કોઈને ભૂતકાળમાં થયેલ અથવા તો ભવિષ્યમાં થનારી ઘટનાઓ દેખાય છે. આ ઘટનાઓ વ્યકિતગત જીવન વિશે અથવા તો દેશવિદેશનો સંબંધ રાખતી હોય છે. કેટલાક એમના પૂર્વ જન્મદેખાય છે.

(૧૪) કોઈને બિહામણા દૃશ્યો દેખાય છે.

(૧૫) કોઈને સ્વજનો, મિત્રોના, પારકા લોકોનો અથવા પોતાનું મૃત્યુ દેખાય છે.

(૧૬) કોઈને એમના મુંઝવણના પ્રશ્નોનો જવાબ ધ્યાનમાં આપમેળે મળી જાય છે.

(૧૭) કોઈને શરીરમાંથી બહાર નીકળી ફરવાનો અનુભવ થાય છે. કોઈને બ્રહ્માંડમાં વિચરવાનો અનુભવ થાય છે.

(૧૮) કેટલાક વિધાર્થીને અભ્યાસ યોગ્ય રીતે કરવો એનું જ્ઞાન થાય છે તો કોઈને ભવિષ્યમાં થનાર પરીક્ષામાં પૂછાયેલા પ્રશ્નો દેખાય છે.

(૧૯) કેટલાકને કોઈ પણ પ્રકારની યોગિક ક્રિયાઓ અથવા અનુભૂતિ થતી નથી. એમને માત્ર નીરવ શાંતિ અને સામાધનનો અનુભવ થાય છે.

વિશેષ સૂચના:

ઉપર જણાવેલ અથવા તો એનાથી અલગ એવી સારી કે ખરાબ, આનંદદાયક બિહામણી અનુભૂતિ સિદ્ધયોગના સાધકો થઈ શકે છે. માત્ર સાધકોએ એનાથી ડરવું કે ગભરાય જવું નહીં. આ અનુભૂતિઓ સાધકોને એમના પૂર્વજન્મના સંસ્કારો, કર્મો અને પ્રારબ્ધના કારણે થાય છે. આ અનુભૂતિ દ્વારા કુંડલીની શક્તિ સાધકના પૂર્વજન્મના અથવા જન્મના કારણે પેદા થતી અશુદ્ધિઓને દુર કરે છે. એથી જ સાધકોનું મન અને શરીર સ્વસ્થ અને શાંત થઈ આત્મદર્શનના માર્ગ આગળ વધે છે.

★★★

૭. સિદ્ધયોગના ફાયદાઓ

સિદ્ધયોગના ફાયદાઓ શું છે?

ગુરુદેવ સિયાગ પાસેથી સિદ્ધયોગની દીક્ષા લીધા પછી સાધકોના જીવનમાં એક સંપુર્ણ પરિવર્તન આવે છે અને જીવનમયી થાય છે. સિદ્ધયોગ સાધના નિયમિત કરવાથી થતા કેટલાક મુખ્ય ફાયદાઓ નીચે પ્રમાણે છે:

(૧) શારીરિક બીમારીઓનું સંપુર્ણ નિરાકરણ:

આ સાધનામાં ગુરુદેવ આપેલ મંત્રનો જાપ અન ધ્યાન નિયમિત કરતાં જટીલ અને અસાધ્ય બીમારીઓ જેવી કે એઈડ્સ, કેન્સર, ડાયાબિટીઝ, હીમોફીલીયા, હિસ્ટીરીયા, ચામડીના દર્દો વગેરે રોગો ધીરે ધીરે નબળા પડી સંપુર્ણ રીતે શરીરથી દુર થઈ જાય છે અને સાધક રોગ મુક્ત અને આનંદમય જીવન વીતાવે છે.

(૨) માનસિક રોગથી મુક્તિ:

આજના ઝડપી જીવનમાં કામકરતા કે બીજા અન્ય કારણોસર મોટાભાગના લોકો માનસિક દબાણમાં આવી જાય છે. જેનાથી શરીર અને મનનું સંતુલન બગડે છે. નકારાત્મક વૃત્તિ વધી જાય છે અને કેટલાક કેસોમાં તો લોકો ડીપ્રેશન જેવી ભયંકર માનસિક બીમારીનો

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

कठिनाई में

साधना की प्रारंभिक अवस्था में बराबर ही कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं।

और उन्नति में बाधाएँ आती रहती हैं तथा जब तक आधार तैयार नहीं हो जाता, तब तक अंदर के दरवाजों के खुलने में देर लगती है। यदि ध्यान करते समय बराबर ही तुम्हें निश्चलता का अनुभव होता हो और आंतर ज्योति की झलकें मिलती हों, यदि तुम्हारी अंतर्मुखी प्रवृत्ति इतनी प्रबल होती जा रही हो कि बाहरी बंधन क्षीण होने लगे हों और प्राणगत विक्षोभ अपनी शक्ति खोने लगे हों तो इसका मतलब है कि साधना में तुम्हारी बहुत कुछ उन्नति हो गयी है।

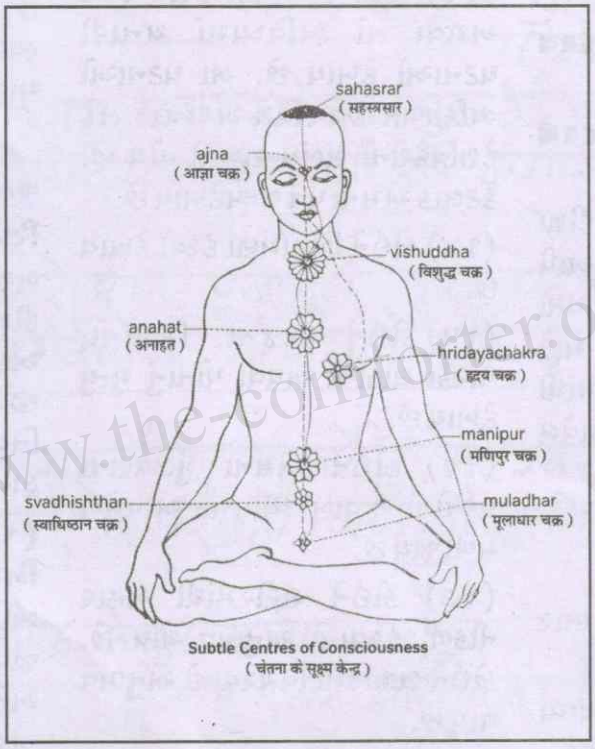

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

योग का मार्ग लंबा है, इस मार्ग की एक एक इंच जमीन को बहुत अधिक प्रतिरोध का सामना करते हुए जीतना होता है, और साधक में जिस गुण का होना सबसे अधिक आवश्यक है। **वह है धैर्य और एकनिष्ठ अध्यवसाय और उसके साथ-ही-साथ ऐसा श्रद्धा-विश्वास जो सब प्रकार की कठिनाइयों के आने, विलंब होने तथा आपाततः विफलताओं के होने पर भी दृढ़ बना रहे।**

साधना की प्रारंभिक अवस्था में प्रायः ये बाधाएँ आया करती हैं। इनके आने का कारण यह है कि अभी तक तुम्हारी प्रकृति पर्याप्त रूप से ग्रहणशील नहीं हो पायी है। तुम्हें यह पता लगाना चाहिये कि तुम्हारी बाधा कहाँ पर है, मन में है या प्राण में, और फिर तुम्हें वहाँ अपनी चेतना को प्रसारित करने का प्रयास करना चाहिये। वहाँ पर पवित्रता और शांति का अधिक मात्रा में आह्वान करना चाहिये तथा उस पवित्रता और शांति में अपनी सत्ता के उस भाग को सच्चाई के साथ और **पूर्ण रूप में भागवत शक्ति के चरणों में अर्पण कर देना चाहिये ।**

प्रकृति का प्रत्येक भाग अपनी पुरानी चालढाल को ज्यों-का-त्यों बनाये रखना चाहता है और जहाँ तक उससे संभव होता है, किसी मूलगत परिवर्तन और उन्नति को होने देना नहीं चाहता, क्योंकि ऐसा होने पर उसे अपने से किसी उच्चतर शक्ति के अधीन होना पड़ता है, और उसे अपने क्षेत्र में, अपने पृथक् साम्राज्य में अपने प्रभुत्व को खोना पड़ता है।

यही कारण है कि रूपांतर की प्रक्रिया इतनी लंबी और कठिन बन जाती है। मन निस्तेज हो जाता है, क्योंकि मन का नीचे का आधार है भौतिक मन जिसका धर्म है **तमस्** या जड़त्व-कारण जड़तत्त्व का मूल धर्म है- तामसिकता।

जब लगातार या बहुत समय तक उच्चतर अनुभूतियाँ होती रहती हैं, तब मन के इस भाग में थकावट आ जाती है अथवा प्रतिक्रिया होने के कारण बेचैनी या जड़ता उत्पन्न हो जाती है। इस अवस्था से बचने का एक उपाय है-**समाधि**, समाधि की अवस्था में शरीर को शांत बना दिया जाता है, भौतिक मन एक प्रकार की तंद्रा की अवस्था में आ जाता है, और आंतर चेतना को अपनी अनुभूतियाँ लेने के लिये स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है। इसमें असुविधा यह है कि समाधि अनिवार्य हो जाती है और जाग्रत् चेतना का प्रश्न हल नहीं होता; वह अपूर्ण ही रह जाती है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के बारे में

संदेहों और भ्रांतियों की कंटीली झाड़ियों में छानबीन करके, वह सत्य के कुछ फूल पा लेता है। इस प्ररूप से कर्म भी झुरमठ में से रास्ता निकालने के जैसे हैं, जो एक उत्साह भरे फिर भी सन्तप्त, आगे की ओर लड़खड़ाते हुए उत्सुक असफलताओं से आंशिक और अस्थायी सफलता की ओर बढ़ते जाते हैं।

प्रकृति ने अभी तक जो कुछ संपन्न किया है, उससे यह जाति कहीं अधिक श्रेष्ठ है लेकिन साथ ही उस पर इतनी अक्षमताएँ लदी हैं कि अगर इस सांचे को तोड़कर आगे बढ़ने की संभावना न होती तो निराशावादी दर्शनों में काफी औचित्य होता जो जीवन से निराश होकर न जीने की भागवत इच्छा में ही मानव जाति के बच निकलने का एकमात्र द्वार देखते हैं। जिसमें किसी और निस्तार के लिये स्थान नहीं है लेकिन प्रकृति सर्वप्रज्ञ भगवान् की इच्छा है और यह संसार को बेतुकापन तक घटाने के लिये काम नहीं कर रही।

वह अपना लक्ष्य जानती है। वह जानती है कि मनुष्य जैसा कि वह इस समय है, एक **संक्रमणशील प्ररूप** है और जहाँ तक उससे बने वह इस प्ररूप को बचाये रखने के साथ सुसंगत रूप से उसकी ओर आगे बढ़ने के लिये दबाव डालती है, जिसे उसने भगवान् के **शाश्वत ज्ञान** में, परे खड़ा देखा है। इस अहंकार से वह वैश्व चेतना की ओर, इस सीमांकन से अनन्त के अंदर मुक्त गति की ओर, इस धुँधले और टटोलते हुए मन से वस्तुओं के प्रत्यक्ष सूर्यालोक के अन्तर्दर्शन की ओर, पाप-पुण्य के परिणामहीन झगड़े से एक ऐसी चाल की ओर, जो सहज रूप से भगवान् के निश्चित किये हुए मार्ग की ओर चलती है। इस टूटे-फूटे दुःख से घिरे कर्म से उल्लसित, मुक्त क्रियाशीलता की ओर, हमारे अंगों के अस्त-व्यस्त संघर्ष से, शुद्ध, सुलझे हुए सामंजस्यपूर्ण संयोजन की ओर, इस भौतिक भावापन्न मानसिकता से आदर्श बने हुए, प्रदीप्त प्राण, शरीर और मन की ओर, प्रतीक से वास्तविकता, भगवान् से जुदा मनुष्य से, मनुष्य में भगवान् और भगवान् में मनुष्य की ओर ले जाती है।

संक्षेप में जिस तरह उसने सफलता के साथ भौतिक तत्त्व से प्राण, प्राण से मन और मानसिक अहंकार के लिये **अभीप्सा** की थी, उसी तरह वह दैव निर्दिष्ट सफलता के साथ मन के परे के उस तत्त्व के लिये अभीप्सा करती है, जो हिन्दुओं का विज्ञान, आत्म प्रदीप्त भाव या सत्य आत्मा है, जो अभी मनुष्य तथा जगत् में छिपा हुआ तथा **अतिचेतन** है, जिस तरह प्राण हमेशा भौतिक द्रव्य में और मन प्राण में छिपा था।

यह विज्ञान क्या है? यह हमें अभी देखना है लेकिन प्रकृति जानती है कि उसके द्वारा वह उस उच्चतम पद को मजबूती से पकड़ सकती है, जो समस्त प्रतीकों की आत्मा में **सच्चिदानन्द** में स्थित वास्तविकता है।

प्रकृति का लक्ष्य ही योग का लक्ष्य भी है। प्रकृति की तरह योग भी इस अहंकार के सांचे को, मानसिक भावापन्न प्राण-शरीर और भौतिक मन के सांचे को तोड़ना चाहता है ताकि आदर्श कर्म, आदर्श सत्य और अनन्त स्वाधीनता को हमारी आध्यात्मिक सत्ता में प्राप्त कर सके। इतने महान् लक्ष्य को संपन्न करने के लिये बड़ी और भयंकर प्रक्रियाओं की जरूरत होती है। जो लोग इस मार्ग पर उत्सुक रहे हैं या जिन्होंने लक्ष्य की ओर नये मार्ग खोले हैं, उन्हें संभावना के रूप में बहुत बार **बुद्धिक्षय**, जीवन और **स्वास्थ्यक्षय** या नैतिक सत्ता के विघटन का सामना करना पड़ा है। अगर वे हार भी जाये तो भी उन पर दया करने या उनका तिरस्कार करने की जरूरत नहीं होती।

वे मानवता की प्रगति के लिये शहीद हैं -- खोये हुए नाविक या शोध के संकटों द्वारा मारे गये वैज्ञानिक से बढ़कर। वे सचेतन रूप से यथासंभव उच्चतम उपलब्धियाँ तैयार करते हैं जिनकी ओर शेष मानव जाति सहज वृत्ति से और अचेतन रूप में बढ़ती है।

हम यह भी कह सकते हैं कि योग प्रकृति द्वारा नियुक्त ऐसा साधन है, जिसे प्रकृति अपने लक्ष्य की उपलब्धि के लिये सुरक्षित रखती है, जब वह मानव जाति के कम-से-कम एक भाग को स्वभाव से प्रयास के समकक्ष बना ले और उसे बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक रूप से सफलता के लिये तैयार कर ले। प्रकृति **अतिप्रकृति** की ओर चलती है। योग, भगवान् की ओर बढ़ता है। जगत्-आवेग और मानव-अभीप्सा समान यात्रा पर एक ही गति है।

❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से...

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

भगवान् की अवतरण-प्रणाली

जीव के ब्रह्मभूत होने और उसी कारण भगवान् में, श्रीकृष्ण में निवास करने की बात स्वयं गीता भी कहती है, पर यह ध्यान में रहे कि गीता ने कहीं भी यह नहीं कहा है कि जीव भगवान् या पुरुषोत्तम हो जाता है। हाँ, जीव के संबंध में गीता ने इतना अवश्य कहा है कि जीव सदा ही ईश्वर है, भगवान् की अंश सत्ता है (ममैवांशः)। कारण यह जो महामिलन है, यह जो उच्चतम भाव है यह आरोहण का ही एक अंग है; और यद्यपि यह वह **'दिव्य-जन्म** है जिसे प्रत्येक जीव प्राप्त होता है, पर यह परमेश्वर का नीचे उतरना नहीं है, यह अवतार नहीं है, अधिक-से-अधिक, बौद्ध सिद्धांत के अनुसार इसे हम बुद्धत्व की प्राप्ति कह सकते हैं, यह जीव का अपने अभी के जागतिक व्यष्टिभाव से जागकर अनंत चैतन्य को प्राप्त होना है। इसमें अवतार की **आंतरिक चेतना** अथवा अवतार के लाक्षणिक कर्म का होना जरूरी नहीं है।

दूसरी ओर, भागवत चैतन्य में प्रवेश करने के फलस्वरूप यह हो सकता है कि भगवान् हमारी सत्ता के मानव-अंगों में प्रवेश करें या उनमें आगे आकर प्रकट हों और अपने-आपको मनुष्य की प्रकृति, उसकी कर्मण्यता, उसके मन और शरीर तक में ढाल दे; और तब इसे कम-से-कम **अंशावतार** तो कहा ही जायेगा। गीता कहती है कि ईश्वर हृद्देश में निवास करते हैं,-अवश्य ही गीता का अभिप्राय सूक्ष्म शरीर के हृदय से है, जो भावावेगों, संवेदनों और मनोमय चेतना का ग्रंथिस्थान है, जहाँ व्यष्टि-पुरुष भी अवस्थित है, पर यहाँ वे परदे की आड़ में ही रहते हैं, अपनी माया से, अपने-आपको ढक कर रहते हैं। परन्तु, ऊपर उस लोक में, जो हमारे अन्दर है, पर अभी हमारी चेतना के परे है, जिसे प्राचीन तत्त्वदर्शियों ने स्वर्ग कहा है, वहाँ ये ईश्वर और यह जीव दोनों एक साथ एक ही स्वरूप में प्रत्यक्ष होते हैं। इन्हीं को कुछ संप्रदायों की सांकेतिक भाषा में पिता और पुत्र कहा गया है--पिता है भागवत पुरुष और पुत्र है भागवत मनुष्य जो उन्हीं से उन्हीं

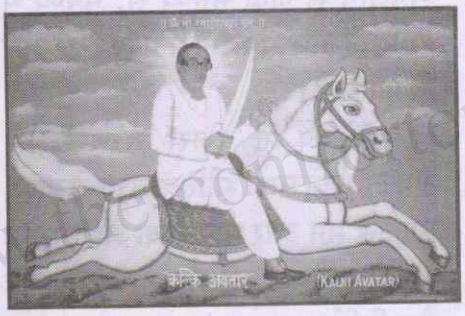

की परा प्रकृति से, परा माया से निम्न, मानव-प्रकृति में जन्म लेता है। इन्हीं परा प्रकृति, परा माया को जिनके द्वारा यह जीव अपरा मानव प्रकृति में उत्पन्न होता है, **कुमारी माता** कहा गया है।

ईसाइयों के अवतारवाद का यही भीतरी रहस्य प्रतीत होता है। त्रिमूर्ति में पिता ऊपर इसी अंतस्वर्ग में हैं; पुत्र अर्थात् गीता की जीवभूता परा प्रकृति इस लोक में, इस मानव-शरीर में दिव्य या देव-मनुष्य के रूप में है; और पवित्र आत्मा (होली स्पिरिट) इन दोनों को एक बना देती है और इसी में इन दोनों का परस्पर-व्यवहार होता है। क्योंकि यह प्रसिद्ध है कि वह पवित्र आत्मा ईसा में उतर आयी थी और इसी अवतरण के फलस्वरूप ईसा के शिष्यों में भी, जो सामान्य मानव-कोटि के थे, उस महत् चैतन्य की क्षमता आ गयी थी। परन्तु यह भी संभव है कि परम पुरुष पुरुषोत्तम का उच्चतर भागवत चैतन्य मनुष्य के अन्दर उतर आये और जीव-चैतन्य का उसमें लय हो जाय।

श्री चैतन्य के समकालीन लोग बतला गये हैं कि वे अपनी साधारण चेतना में भगवान् के केवल **एक प्रेमी और भक्त थे** और देवत्वारोपण को अस्वीकार करते थे। किन्तु कभी-कभी वे एक ऐसे विलक्षण भाव में आ जाते थे कि उस अवस्था में, वे स्वयं भगवान् हो जाते तथा भगवद्भाव से ही भाषण और कर्माचरण करते थे; और ऐसे समय उनसे भगवत्-सत्ता के प्रकाश, प्रेम और शक्तिका अबाध प्रवाह उमड़ पड़ता था।

इसी को यदि जीवन की सामान्य अवस्था मान लें, अर्थात् मनुष्य सदा इस भागवत सत्ता और भागवत चैतन्य का केवल एक पात्र ही बना रहे तो ऐसा पुरुष अवतार-संबंधी मध्यवर्ती भावना के अनुसार अवतार होगा? मानव की अवधारणा के अनुसार अवतार-संबंधी यह भावना ठीक ही जँचती है; क्योंकि यदि मानव प्राणी अपनी प्रकृति को इतना उन्नत कर ले कि उसे भागवत सत्ता के साथ **एकत्व** अनुभव हो और वह भगवान् के चैतन्य, प्रकाश, शक्ति और प्रेम का एक वाहक-सा बन जाय, उसका अपना संकल्प और व्यक्तित्व भगवान् के संकल्प और उनकी सत्ता में घुल-मिलकर अपना पृथकत्व खो दे।

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित 'गीता प्रबंध' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

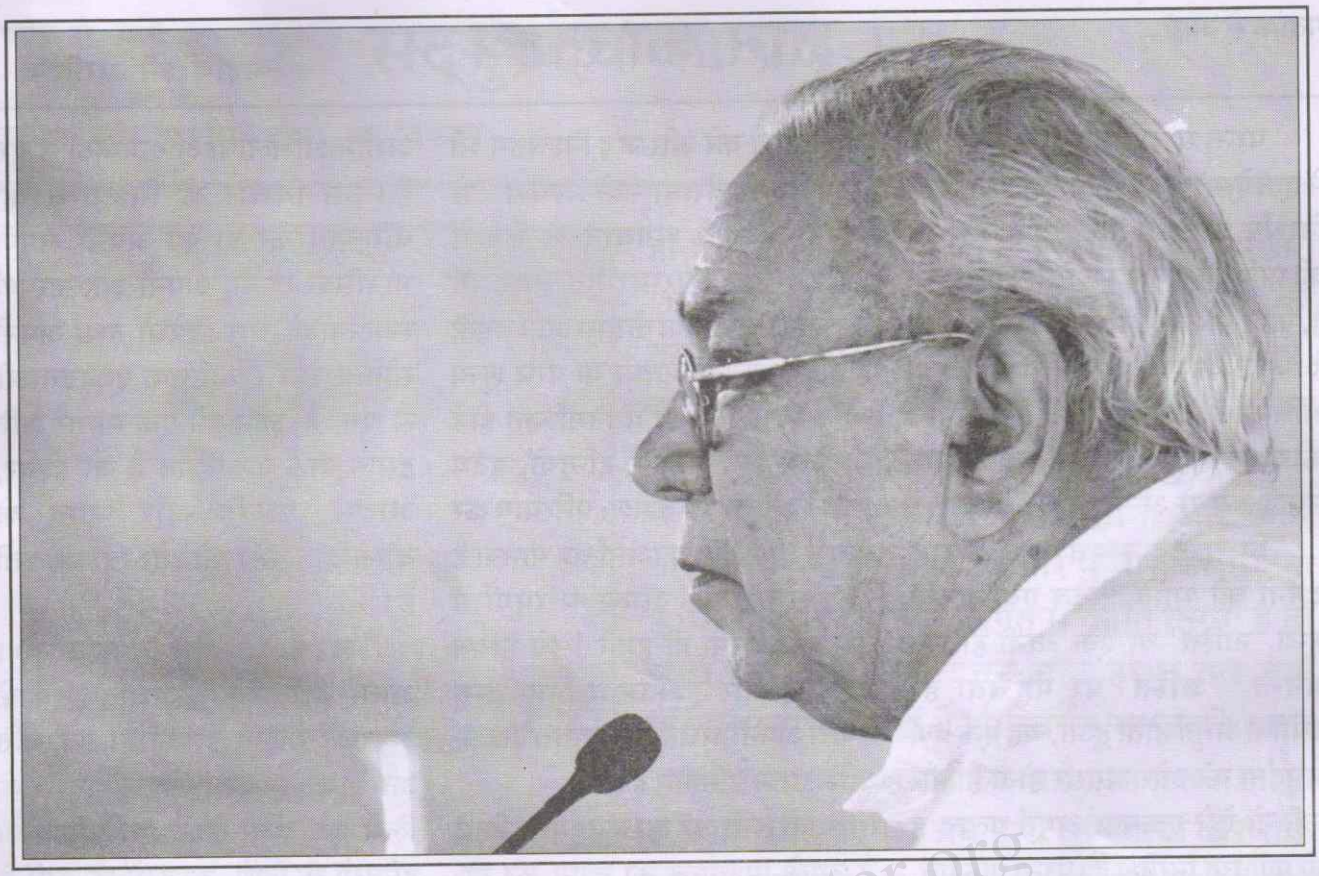

"अक्षय आनन्द" का ज्ञान विश्वभर में बाँटने का फैसला

गीता के अक्षय आनन्द को संतों ने 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' की संज्ञा दी है। ***"मेरे गुरुदेव ने उस "अक्षय आनन्द" को पृथ्वी पर लाकर संसार के प्राणियों में बाँटने का कार्य मुझे सौंपा है। उसको अब मैंने निःसंकोच विश्वभर में बाँटने का फैसला कर लिया है।"***

भारत के निर्धन लोग रोटी कपड़े के चक्कर से निकले तो इस तरफ ध्यान जाय ! लम्बी गुलामी ने भी लोगों को भारी गुमराह कर दिया हैं। इस प्रकाश के, संसार में फैलते ही विश्व भारत की तरफ आकर्षित होगा और क्रमिक विकास की गति से शीघ्र उन्नति के शिखर पर पहुँच जायेगा, क्योंकि ऐसी स्थिति में संसार की सारी शक्तियाँ उत्थान में पूर्ण सहयोग देन में लगेगी।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-'शर्म, संकोच और हठधर्मीता की आखिर नहीं चल सकी' शीर्षक से

गतांक से आगे...

ज्ञान का लक्ष्य

-महर्षि श्री अरविन्द

परन्तु सम्भावनाएँ ये हैं कि जगत् में एक ऐसा उद्देश्य भी है, जो इससे कम निरर्थक एवं कम निरुद्देश्य है, निरपेक्ष की प्राप्ति के लिये एक ऐसा आवेग भी है, जो इससे कम नीरस एवं कम अमूर्त है। जगत् का एक ऐसा सत्य भी है, जो अधिक विशाल एवं जटिल है, अनन्त की एक ऐसी ऊँचाई भी है, जो अधिक समृद्ध रूप से अनन्त है।

निःसन्देह अमूर्त तर्क, पुराने दर्शनों की भांति, सदैव एक अनन्त शून्य **'नास्ति'** या एक उतनी ही रिक्त अनन्त **'अस्ति'** पर पहुँचता है; क्योंकि अमूर्त होता हुआ, यह एक पूर्ण अमूर्तता की ओर अग्रसर होता है और यही दो ऐसे एकमात्र अमूर्त प्रत्यय हैं जो पूर्णतया निरपेक्ष हैं। परन्तु एक मूर्त, सदा गहरी होती जानेवाली प्रज्ञा जो संकीर्ण और अक्षम मानव-मन के धृष्ट अमूर्त तर्क की नहीं, बल्कि **निःसीम** अनुभव के अधिकाधिक ऐश्वर्य की सेवा करे, दिव्य अतिमानवीय ज्ञान की कुँजी हो सकती है।

हृदय, संकल्प-शक्ति प्राण, यहाँ तक कि शरीर भी, विचार के समान ही, दिव्य चिन्मय-सत्ता के रूप हैं तथा अत्यन्त अर्थपूर्ण संकेत हैं। इनमें भी ऐसी शक्तियाँ हैं। जिनके द्वारा अन्तरात्मा अपनी पूर्ण आत्मचेतनता की ओर लौट सकती है अथवा इनके पास भी ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा वह इसका रसास्वादन कर सकती है।

परम संकल्प का उद्देश्य एक ऐसी परिणति को साधित करना हो सकता है, जिसमें सम्पूर्ण सत्ता का अपनी दिव्य तृप्ति को उपलब्ध करना अभिमत हो तथा जिसमें ऊँचाइयाँ, गहराइयों को आलोकित करे और जड़ निश्चेतन भी परम अतिचेतना के स्पर्श से अपने-आपको भगवान् के रूप में अनुभव करे। परम्परागत ज्ञानमार्ग विवर्जन की प्रक्रिया के द्वारा आगे बढ़ता है और निश्चल आत्मा या परम शून्य या अव्यक्त निरपेक्ष में निमज्जित होने के लिये शरीर, प्राण, इन्द्रियों, हृदय तथा विचारत का क्रमशः परित्याग कर देता है। पूर्णज्ञान का मार्ग यह मानता है कि सर्वांगीण आत्म-परिपूर्णता उपलब्ध करना ही हमारे लिये नियत उद्देश्य है और एकमात्र वर्जनीय वस्तु हमारी अपनी अचेतनता, हमारा अज्ञान और उसके परिणाम हैं।

जो सत्ता अहं का रूप धारण किये है उसके मिथ्यात्व का त्याग कर दो; तब हमारी सच्ची सत्ता हमारे अन्दर प्रकट हो सकती है। जो प्राण निरी प्राणिक लालसा का तथा हमारे दैहिक जीवन के यान्त्रिक चक्र का रूप धारण किये हुए है उसके मिथ्यात्व को त्याग दो; और तब परमेश्वर की शक्ति में और अनन्त के हर्ष में अवस्थित हमारा सच्चा प्राण प्रकट हो उठेगा। स्थूल दृश्य-प्रपंच और द्वंद्वात्मक सम्वेदनों के वशीभूत इन्द्रियों के मिथ्यात्व का त्याग कर दो, हमारे अन्दर एक महत्तर इन्द्रिय है जो इनके द्वारा पदार्थों में विद्यमान भगवान् की ओर खुल सकती है तथा दिव्य रूप में उसे प्रत्युत्तर दे सकती है।

अपनी कलुषित वासनाओं और कामनाओं तथा द्वंद्वात्मक भावों से युक्त हृदय के **मिथ्यात्व** को त्याग दो, हमारे अन्दर एक गंभीरतर हृदय खुल सकता है जो प्राणिमात्र के लिये दिव्य प्रेम से तथा - अनन्त के प्रत्युत्तरों के लिये असीम अभिलाषा और उत्कंठा से युक्त है। उस विचार के मिथ्यात्व का परित्याग कर दो जो अपनी अपूर्ण **मानसिक रचना**, अपनी अहंकारपूर्ण स्थापनाओं और निषेधों तथा अपनी सीमित और **ऐकान्तिक एकाग्रताओं** से युक्त है; ज्ञान की एक महत्तर शक्ति इसके पीछे अवस्थित है जो ईश्वर, आत्मा, प्रकृति और जगत् के वास्तविक सत्य की ओर खुल सकती है।

लक्ष्य है सर्वांगीण आत्म-चरितार्थता,...अर्थात् हृदय के अनुभवों के लिये, इसकी प्रेम, हर्ष, भक्ति और पूजा सम्बन्धी सहज-प्रवृत्ति के लिये एक चरम लक्ष्य एवं परिणतिय इन्द्रियों के लिये, वस्तुओं के रूपों में इनकी दिव्य सौन्दर्य, शिव और आनन्द की खोज के लिये एक चरम लक्ष्य एवं परिणतिय प्राण के लिये, इसकी कर्म करने तथा दिव्य शक्ति, प्रभुत्व और पूर्णता प्राप्त करने की प्रवृत्ति के लिये एक चरम लक्ष्य एवं परिणतिय विचार के लिये, इसकी सत्य, प्रकाश, दिव्य प्रज्ञा और ज्ञान की भूख के लिये इसकी सीमाओं से परे एक चरम लक्ष्य एवं परिणति ।

हमारी प्रकृति के इन अंगों का लक्ष्य कोई ऐसी चीज नहीं है जो इनसे सर्वथा भिन्न हो तथा जिससे इन सबको बहिष्कृत कर दिया जाता हो, बल्कि एक ऐसी **परम सद्वस्तु** है जिसमें ये अपने-आपको अतिक्रम कर जाते हैं और साथ ही अपने चरम एवं अनन्त रूपों को तथा मानातीत सामंजस्यों को भी प्राप्त कर लेते हैं ।

संदर्भ-'योग समन्वय'
पुस्तक पृष्ठ-289

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

परलोक और इहलोक दोनों का विकास

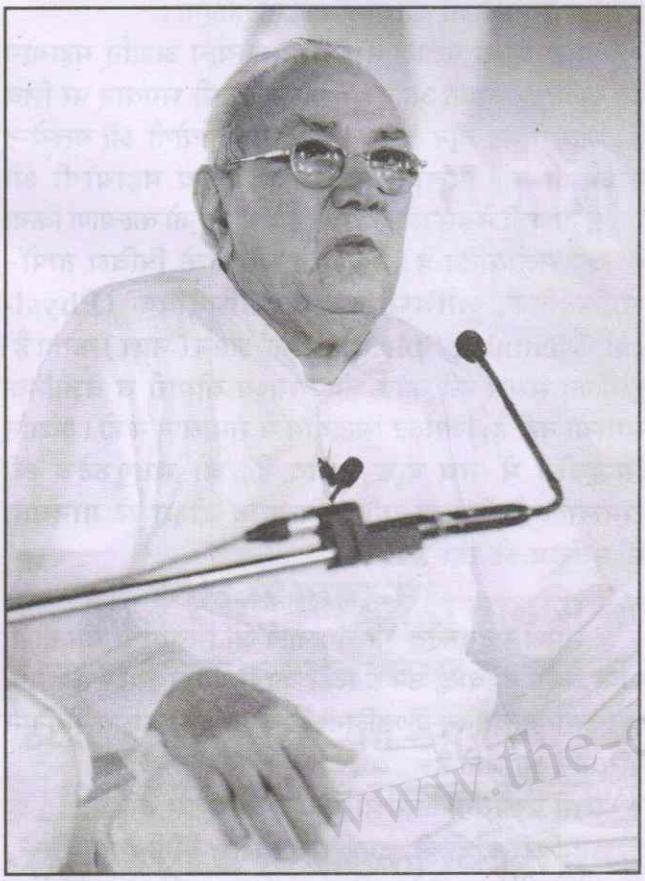

योग होगा, उससे शारीरिक बीमारी खत्म और नाम का नशा आएगा और वृत्ति बदल जाएगी। शारीरिक रोग खत्म, मानसिक रोग खत्म और नशों से छुट्टी तो यह जीवन तो सुधर ही गया। हमारे लोगों ने मेरे हिसाब से दो बड़ी गलती कर दी- एक तो परलोक के लालच में यह लोक बिगाड़ दिया।

इस लोक में भौतिक रूप से परिवर्तन नहीं आएगा, रोटी नहीं मिलेगी तो राम याद नहीं आएगा। इसलिए आराधना से पहले भौतिक जीवन में परिवर्तन लाना चाहिए। और दूसरा-राम का नाम बुढ़ापे में ले लेंगे। अब ये जवान छोरे-छोरी नहीं समझते, बुढ़ापा चीज क्या होता है? 70 साल से ऊपर निकले, उनसे पूछो ! शरीर में सौ तरह के रोग लग जाते हैं। फिर रोग की तरफ ध्यान जाता है, राम की तरफ जाता ही नहीं, केवल पश्चाताना शेष रह जाता है। इसलिए यह परिवर्तन भी युवावस्था में आना चाहिए। मेरे शिष्यों में 90 प्रतिशत से ज्यादा युवा लोग है और खास तौर से साइन्स के लोग हैं। और मैं मानकर चलता हूँ कि जब तक धार्मिक जगत् में क्रांति करनी है तो युवा वर्ग जब तक चेतन नहीं होगा तब तक परिवर्तन संभव नहीं है। परिवर्तन या क्रांति अगर लानी हो तो युवा वर्ग ही लाया है, आज तक लाया है, आगे भी लाएगा। अब दूसरे आराधना के तरीके रिजल्ट नहीं दे रहे हैं, इसलिए वहाँ नहीं जाते हैं, मेरे पास इसलिए आते हैं कि इसमें बड़ा अजीब तरीके से युवाओं में परिवर्तन हो रहा है।

ध्यान करने लगते हैं तो वे Concentrate (एकाग्र) हो जाते हैं, अगर यहाँ (आज्ञाचक्र पर) एकाग्र हो जाए तो फिर किताब में भी हो जाता है- 3rd Division पास करने वाला, First Division में आ रहा है और मानसिक तनाव न होने से, पढ़ाई में बड़ा मन लगता है। इस प्रकार यह मनुष्य जाति में एक क्रियात्मक बदलाव है।

अपनी शक्तियों को चेतन करके लाभ उठाना है। यह कोई जादू नहीं है, यह मानव में Due (बाकी) था। मानव जाति में यह विकास होना संभव है, Due था शुरू हो गया, यह कोई Abnormal (असाधारण) बात नहीं हो रही है।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- **आधिदैहिक, आधिभौतिक व आधिदैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (**नाश**) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव हैं, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

भारत की स्थिति

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

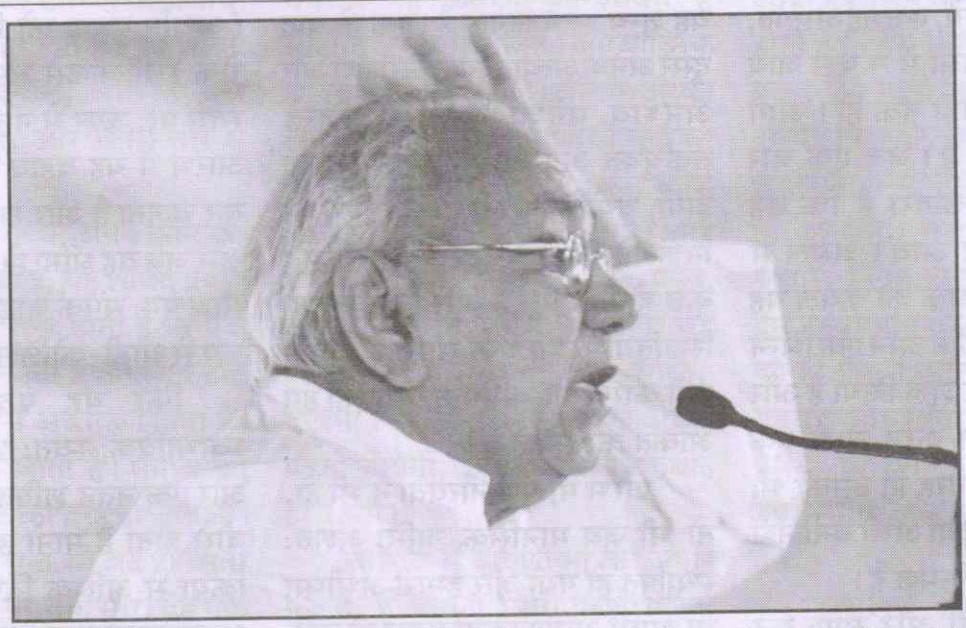

आज भारत में जितनी तामसिकता है, उतनी किसी युग में नहीं रही। आज देश में जितना अविश्वास है, उतना पहले कभी नहीं रहा। आज देश का हर व्यक्ति एक-दूसरे को ठगने का प्रयास कर रहा है।

कोई समझ नहीं पा रहा है, देश किस दिशा में आगे बढ़ रहा है। ईश्वर पर सही अर्थों में किसी का विश्वास रहा ही नहीं। हर व्यक्ति भविष्य के बारे में सर्वाधिक चिन्तित है। सभी लोग लोभ, लालच के वशीभूत होकर येनकेन प्रकारेण धन संग्रह में लगे हैं। ऐसे लोगों की संख्या देश में बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। देश का आधे से ज्यादा धन, इस वृत्ति के लोगों के पास अनधिकृत रूप से, काले धन के रूप में जमा किया हुआ पड़ा है। एक तरफ लोगों को खाने-पीने की मूलभूत जरूरत पूरी करने के लिए धन नहीं मिल रहा है, दूसरी तरफ खर्च करने की कोई जगह नहीं है।

"जब तक सरकार में बैठे लोग धार्मिक और चरित्रवान् नहीं होंगे, देश का उत्थान असंभव है।"

मैं देख रहा हूँ, ऐसी वृत्ति के लोगों का पतन प्रारम्भ हो चुका है, सबसे खुशी की बात तो यह है कि इस बार यह कार्य ऊपर से प्रारम्भ हुआ है, अतः नीचे तक फैलने में अधिक देर नहीं लगेगी। किसी हद तक यह परिवर्तन नीचे तक पहुँच चुका है, यह बहुत ही शुभ लक्षण है।

10.10.1997, बीकानेर

सावधान रहना आवश्यक है कि अपनी मानसिक बाह्य रचना को ढहा देने के बाद हम फिर से एक मिथ्या गहराई में कैद हो जायें, एक नई असंगत, भ्रान्त या अविश्वासी में न फंस जायें जो संभवतः विद्रोही तक हो। **आगे बढ़ना आवश्यक है। जब एक बार योगसाधना पर खतरा है कि वह फिर कभी हाथ न आयें।** असल में परीक्षा यही है। साधक को केवल यह समझ लेना चाहिए कि उसने एक भिन्न लोक में जन्म लेना शुरू किया है और पृथ्वी पर पदार्पण करने वाले एक नवजात शिशु की तरह ही उसकी भी नई आँखें, नई इन्द्रियाँ अभी बनी नहीं है। यह चेतना में संक्रमण है।

प्याला खाली और साफ कर रखना जरूरी है ताकि **दिव्य सोम** उसके अन्दर ढाला जा सके। 'इस दशा में हमारे पास एक ही उपाय है कि अपनी अभीप्सा को कसके पकड़े रखें और उसे आगे ही आगे बढ़ने दें, ठीक इस प्रकार के तीव्र अभाव द्वारा ही अभीप्सा को उस अग्नि की तरह उद्दीप्त करें। जिसमें हमने अपनी सब पुरानी चीजें, पुरानी जिन्दगी, पुराने विचार, अपने सारे भाव झोंक दिये हैं-

केवल हमारा अटूट विश्वास बना हुआ है कि उस संक्रमण के बाद एक द्वार खुलेगा। और हमारा यह विश्वास अनुचित नहीं है; यह सरल आदमी का भोलापन नहीं बल्कि पूर्व- ज्ञान है, हमारे अन्दर कोई वस्तु है जो और हमसे पहले जानती है, हमसे पहले देखती है और आवश्यकता, अन्वेषण, विवरणातीत विश्वास के रूप में अपनी दृष्टि उपरि तल पर प्रेषित करती है।

श्री अरविन्द का कथन है, विश्वास एक अन्तर्ज्ञान है जो सत्य प्रमाणित होने के लिए केवल अनुभव की अपेक्षा नहीं करता है बल्कि अनुभव तक पहुँचा देता है। धीरे-धीरे यह शून्य भरने लगता है। एक के बाद दूसरे अनेक अत्यावश्यक निरीक्षण और अनुभव मनुष्य करता है जिन्हें तर्कयुक्त अनुक्रम में डालना गलत होगा, क्योंकि पुरानी दुनिया से बाहर निकलते ही मनुष्य देख लेता है कि सब कुछ होना संभव है और विशेषतः दो स्थितियाँ कभी एक सी नहीं होती- इसी कारण आध्यात्मिक रेखाएँ ही हम अंकित कर सकते हैं।

प्रारंभ में, पूर्ण नीरवता न भी हो, तो भी जब मानसिक शान्ति अंशतः स्थापित हो गयी और हमारी अभीप्सा या हमारी आवश्यकता प्रबल हो उठी, सतत् और विदारक बन गई। मानो भीतर एक गड्ढा सतत् लिये चल रहे हों, तब पहली अजीब चीज देखने में आती है, जिसका हमारी शेष योगसाधना पर असीम प्रभाव पड़ेगा। सिर के चारों ओर, विशेष रूप से गर्दन में, साधक एक विलक्षण दबाव सा महसूस करता है, जो मिथ्या सिरदर्द की तरह लग सकता है।

शुरु में उसे देर तक सहना कठिन होता है और मनुष्य अपने आप को झकझोरता है, एकाग्रता को दूर करता है, **'किसी और चीज में'** अपना ध्यान डालता है। धीरे-धीरे यह दबाव एक अधिक स्पष्ट रूप धारण करता है और साधक सचमुच का एक प्रवाह अनुभव करता है जो नीचे उतर रहा है- एक शक्ति धारा है, जो अप्रिय विद्युत धारा की तरह नहीं बल्कि अधिकतर एक तरल राशि सम होती है। तब मालूम पड़ता है कि उस **'दबाव'** अथवा आरंभ के मिथ्या सिरदर्द का एकमात्र कारण इस **पराशक्ति** के अवरोहण में हमारी मदद, रुकावट है और हमें करना उतना ही है कि उसका मार्ग बंद न करें (अर्थात् प्रवाह को सिर के अन्दर न रोकें) बल्कि उसे अपनी सत्ता के सारे स्तरों पर, ऊपर से नीचे तक उतरने दें। आरंभ में यह बहाव काफी रुक-रुक कर चलता है और अनियमित होता है और जब वह धीमा हो जायें, तब उसके साथ पुनः संपर्क जोड़ने के लिए सचेत रूप से थोड़ी-कोशिश करनी पड़ती है।

फिर यह प्रवाह अविराम, स्वाभाविक, स्वतः प्रवृत हो जाता है और एक **नूतन शक्ति** को अतिसुखद बोध होता है मानो हमारे फेफड़ों की क्रिया से अधिक विपुल कोई दूसरा श्रवासोच्छवास हमें सब ओर से घेरे हुए है, सराबोर कर रहा है, हमारा सब भार हर रहा है और साथ ही साथ हमें सुदृढ़ता से पूर्ण कर रहा है। शरीर पर उसका प्रभाव बहुत हद तक ठीक उससे मिलता-जुलता है, जैसा खुली हवा में चलने लगता है।

वास्तव में, मनुष्य को सचमुच उसके प्रभाव का भान नहीं होता (क्योंकि वह बहुत ही धीरे से, थोड़ा करके, अपना स्थान बनाता है) जब तक किसी कारणवश, ध्यानभंग, भूल, मर्यादा उल्लंघन द्वारा उस प्रवाह से अलग न हो जायें। उस दशा में सहसा मनुष्य अपने आप को रिक्त, संकुचित पाता है मानो अकस्मात् ऑक्सीजन कम पड़ गई हो और शरीर के मुरझा जाने की अत्यंत अप्रिय अनुभूति होती है। मनुष्य रह जाता है एक बासी सेब की तरह जिसमें से सूर्य की किरणें और रस, दोनों ही निकाल लिये गये हों। और साधक हैरान होता है कि सचमुच पहले इसके बिना वह

कैसे रह पाता था। हमारी शक्तियों का यह प्रथम रूपांतर है। नीचे और चारों ओर जागतिक प्राण के सामान्य स्त्रोत में से जीवन शक्ति खींचने के बजाय, हम ऊपर से शक्ति लेते हैं। यह शक्ति बहुत अधिक स्पष्ट, अविरत और विष्मता रहित है, और खास तौर से ताजी है।

दैनिक जीवन में, अपने काम के, हजार धन्धों के बीच, यह शक्ति प्रवाह आरंभ में काफी मन्द होती है पर एक क्षण के लिए रुक कर एकाग्रचित होते ही, उसका जोर से अवरोहण होता है। सब निश्चल हो जाता है। मनुष्य की दशा एक पूर्ण घट की तरह हो जाती है। **'प्रवाह'** की अनुभूति भी बंद हो जाती है, मानो सिर से पैर तक सारी देह एक ठोस, स्फटिक के समान स्वच्छ शक्ति से भरी हो (श्री अरविन्द के शब्दों में, शान्ति का एक ठोस शीतल पिण्ड)। यदि हमारी सूक्ष्मदृष्टि खुलने लगी है तो हमें सब कुछ नीलाभ दिखता है। मनुष्य हरितनीलवैदूर्य के समान लगता है- और विशाल, अतिविशाल। शान्त, निस्तरंग, तिस पर वह अवर्णनीय शीतलता। सचमुच मनुष्य ने आदिस्त्रोत में ही डुबकी मारी है क्योंकि यह **'उतरती हुई शक्ति'** है साक्षात् भगवती शक्ति। आध्यात्मिक शक्ति शब्दमात्र नहीं है। अन्ततः उसको अनुभव करने के लिए आँखें मूँद कर बाहर से ध्यान हटाने की कोई आवश्यकता ही न रह जायेगी। चाहे मनुष्य कुछ भी कर रहा हो, खाते, पढ़ते, बातचीत करते समय, हर क्षण वह शक्ति विद्यमान रहेगी, और साधक देखेगा कि जैसे-जैसे शरीर को आदत पड़ती जायेगी, वह अधिकाधिक प्रबल हो उठेगी।

वास्तव में यह शक्ति का अपार पुँज है, जो केवल हमारी ग्रहणशीलता अथवा योग्यता की न्यूनता द्वारा ही सीमित है। कुछ समय बीतने पर साधक को आरोहणशील शक्ति (जिसे भारतवर्ष में **कुण्डलिनी** कहते हैं) की अनुभूति होती है, जो काफी उग्र रूप से हमारे अन्दर मेरूदण्ड के मूल में जागती है और एक स्तर से दूसरे स्तर पर चढ़ती जाती है जब तक सिर के ऊपर न पहुँच जाये। वहाँ एक प्रकार के भास्वर, ज्योतिर्मय स्पन्दन में खिल उठती है जिसमें अनन्तता की अनुभूति होती है (और अक्सर चेतना 'समाधि कहते हैं) मानो मनुष्य सदा के लिए अन्यत्र निकल गया। सभी तापोत्पादक कहलाने योग्य योगपद्धतियाँ (हठयोग के आसन, राजयोग का ध्यान, श्रवास-निग्रह या प्राणायाम इत्यादि) इस ऊर्ध्वागामिनी पराशक्ति को जगाने का ही प्रयत्न करती हैं। ये मार्ग भारी गड़बड़ और खतरे से खाली नहीं है; **इसी कारण प्रबुद्ध गुरु की उपस्थिति और संरक्षण अनिवार्य हैं।**

इसलिए आराधना के इस संक्रमण काल में साधक को धैर्य से साधना करते रहना चाहिए। अपना सम्पूर्ण जीवन गुरु चरणों में समर्पित कर देना चाहिए तथा आराधनाकाल में आने वाली बाधाओं से घबराने व हतोत्साहित होने की बजाय डटकर मुकाबला करना चाहिए।

-सम्पादक

अक्षय आनंद

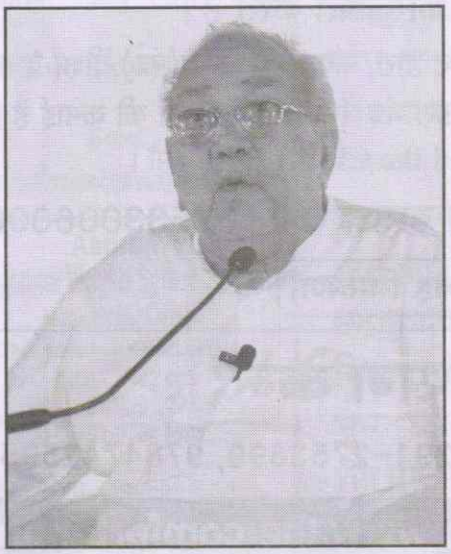

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते।।

श्रीमद्भागवत गीता 5:21

''बाहर के विषयों में अर्थात् सांसारिक भोगों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरुष, अन्तःकरण में जो भगवत् ध्यान जनित आनंद है, उसको प्राप्त होता है (और) वह पुरुष सच्चिदानन्द-घन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ अक्षय आनंद को अनुभव करता है।''

पूज्य सद्गुरुदेव सियाग, कार्यक्रम के दौरान प्रवचन में श्रीमद्भागवत् गीता के पाँचवें अध्याय के 21 वें श्लोक व छठे अध्याय के 15, 21, 27 व 28 वें श्लोकों का उदाहरण देकर समझाते थे कि योग साधना रत साधक को किस प्रकार से अक्षय आनंद की प्राप्ति होने पर, वह उसका रसास्वादन कर परब्रह्म स्वरूप हो जाता है। इस अक्षय आनंद की प्राप्ति के लिये साधक को गुरुदेव द्वारा बताये गए **मंत्र का सघन जप और नियमित रूप से ध्यान** करना चाहिए।

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

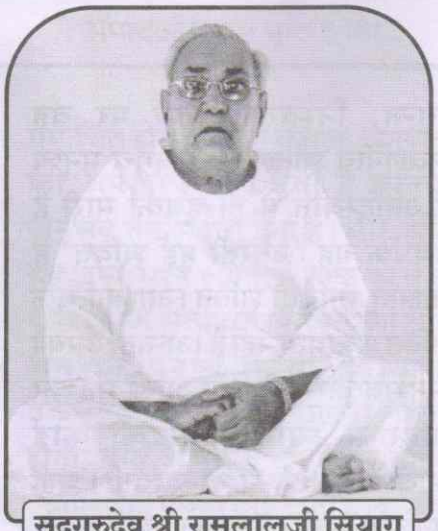

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

मोरारजी देसाई मॉडल रेजिडेंसियल विद्यालय, चिकमंगलूर (कर्नाटक) में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (20-8-2019)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

सीकर (राज.) के विभिन्न विद्यालयों व छात्रावासों में सिद्धयोग शिविर आयोजित।(22 से 25 अगस्त 2019)

सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित यौगिक क्रियाओं की विभिन्न मुद्राओं में छात्र-छात्राएँ

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी